Alleged beating of Students from North India by Workers of MNS in Maharashtra

SHRIMATI BRINDA KARAT (West Bengal): Sir, I am glad that ***...(Interruptions)...***

MR. DEPUTY CHAIRMAN: This is Zero Hour; so, please take three minutes.

SHRIMATI BRINDA KARAT: Sir, then, I don't want to speak. What is this, Sir? ***...(Interruptions)...*** We want a fulfledged discussion in this House.

SHRI A. VIJAYARAGHAVAN (Kerala): No Zero Hour, Sir. Let there be a discussion on this. ***...(Interruptions)...***

श्रीमती वृंदा कारत: महोदय, मैं गृह मंत्री जी से अनुरोध करूंगी कि जब तक बहस चले आप kindly सदन में रहें। ...**(व्यवधान)**...

श्री यशवंत सिन्हा (झारखंड): सर, इस में जीरो ऑवर का बंधन नहीं होना चाहिए और सभी लोगों को मौका मिलना चाहिए। ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति: प्लीज, गवर्नमेंट का काम भी करने दीजिए। ...**(व्यवधान)**...

श्रीमती वृंदा कारत: सर, लालू जी को भी सुनेंगे। ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति: लालू जी, आप ले कर दीजिए।

SUPPLEMENTARY DEMANDS FOR GRANTS (RAILWAY) 2008-09

रेल मंत्री (श्री लालू प्रसाद): महोदय, मैं 2008-2009 के वर्ष के लिए अनुपूरक अनुदान मांगों (रेल) को दर्शाने वाला विवरण (अंग्रेजी तथा हिन्दी में) सभा पटल पर रखता हूँ। [Placed in Library. *See* No.L.T. 9007/08]

ALLEGED BEATING OF STUDENTS FROM NORTH INDIA BY WORKERS OF MNS IN MAHARASHTRA—(*contd.*)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay. Now, Brindaji, you can speak.

SHRI A. VIJAYARAGHAVAN: Sir, will it be a discussion?

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No; no; it is not a discussion. ***...(Interruptions)...*** It has not been converted into a discussion. ***...(Interruptions)...***

SHRI A. VIJAYARAGHAVAN: Sir, it is a very important issue. ***...(Interruptions)...*** The country wants to know how****.(Interruptions)...***

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Vijayaraghavan, we are taking it up. We are giving an opportunity. Please, ***...(Interruptions)...***

SHRI PRASANTA CHATTERJEE (West Bengal): Sir, we wanted a fulfledged discussion. ***...(Interruptions)...*** It is a very important issue. ***...(Interruptions)...*** It is absolutely a privilege motion. ***...(Interruptions)...***

MR. DEPUTY CHAIRMAN: See, if for everything all of you get up, what can I do? *...(Interruptions)...*

SHRI PENUMALLI MADHU (Andhra Pradesh): There is a reason. *...(Interruptions)...*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Madhu, please sit down. *...(Interruptions)...* If you go on speaking like this, nothing will happen. *...(Interruptions)...* What is this? *...(Interruptions)...* Please sit down. वृंदा जी, आप बोलिए।

श्रीमती वृंदा कारत: उपसभापति महोदय, आज सुबह से हम सभी का यह प्रयास रहा कि रूल्स सस्पेंड करके महाराष्ट्र में जो घटनाएं घट रही हैं, उसके बारे में बहस हो। हो सकता है कि कुछ लोगों ने सोचा होगा कि एक पोलिटिकल मामले के रूप में इसे उठाकर कुछ लोग सदन को डिस्रप्ट करने की मंशा से इस सवाल को उठा रहे हैं, लेकिन हकीकत यह है कि यह एक अत्यंत गंभीर सवाल है, क्योंकि देश के रिपब्लिकन कंस्टीट्यूशन की एक सिर्फ एक सोच नहीं, बल्कि उसकी बुनियाद पर आज प्रश्न उठाया जा रहा है।

सर, इस सदन में अलग-अलग धर्म, जाति, इलाके और पोलिटिकल पार्टीज के लोग हैं, लेकिन आज मैं एक भारतीय के रूप में, एक इंडियन नागरिक के रूप में यह बयान कर रही हूँ। अगर आज यह पोलिटिक्स जो महाराष्ट्र में की जा रही है कि महाराष्ट्र में नागरिक के लिए, वहां रहने के लिए, जाने के लिए हमें कोई पासपोर्ट चाहिए, या अलग वीजा चाहिए, और अगर इस तरह यह एक्सट्रीम रिजनलिज्म सोवेनिज्म को एक स्वीकृति दी जा रही है, तो निश्चित रूप से केवल निंदा करके नहीं, हिंदुस्तान की बुनियाद को कमजोर करने में हमें खुद दायित्व स्वीकार करना पड़ेगा। इसमें दो मुख्य सवाल हैं - एक प्रशासनिक और दूसरा राजनैतिक। हम सब लोगों को एक साथ मिलकर, जैसे कल भी अन्य सदन में और आज भी देश भर में सबने इसका खंडन किया है, इसकी निंदा की है। जब हम लोगों ने टीवी के पर्दे पर देखा कि बिहार, उत्तर प्रदेश, बंगाल के युवा, जो रेलवे बोर्ड का एग्जाम देने के लिए, अपनी जीविका के लिए मुंबई में जाकर, या महाराष्ट्र के अन्य केन्द्रों में जाकर इम्तिहान देने के लिए आए थे, उनके ऊपर इस प्रकार का निर्मम हमला हुआ, तो वाकई में इसने पूरे देश की कॉंसेस को अवेक किया कि हम क्या कर रहे हैं, यह पोलिटिक्स क्या है, यह देश कहां जा रहा है? निंदा तो सबने की, खंडन तो सबने किया, लेकिन इसका हल क्या है? कुछ लोगों ने कहा कि बेन करो संगठन को, मैंने सुना, सर, बेन करो, ठीक है। किसी ने कहा कि यह मेंटल केस है। ...**(व्यवधान)**... हमें तो पता नहीं, जो भी हो, लालू जी, आपने कहा या नहीं कहा, लेकिन आप सुनिए। ...**(व्यवधान)**... आप सुनिए इस बात को, लेकिन आज मैं समझती हूँ कि जो जिम्मेदार है, जो इस प्रकार की पोलिटिक्स को सहारा दे रहे हैं, वह है महाराष्ट्र की सरकार, महाराष्ट्र का वह पोलिटिकल गठबंधन। फरवरी महीने से यह चल रहा है। यह किसको पता नहीं कि टैक्सी ड्राइवरों को निकाल-निकाल कर पीट-पीट कर वहां घायल किया गया?

रेल मंत्री (श्री लालू प्रसाद): एन0डी0ए0 के घटक हैं।

श्रीमती वृंदा कारत: लालू जी, कौन किसका घटक है, हम बाद में आपको बताएँगे। लेकिन आप बहुत सीनियर मंत्री हैं, आप इस प्रकार interrupt मत कीजिए। आपके बिहार के लोगों पर इम्तहान देते वक्त हमले किये गये और वह निकम्मी सरकार और वह पॉलिटिक्स जो महाराष्ट्र में चली आ रही है, उसको आप डिफेंड करने के लिए यहाँ बैठे हैं और मुझे interrupt कर रहे हैं? आप ऐसा मत कीजिए। मैं आरोप लगाती हूँ सर...(व्यवधान)...

श्री लालू प्रसाद: गलत आरोप है।

श्री उपसभापति: वह डिफेंड नहीं कर रहे हैं। ...**(व्यवधान)**... देखिए, डिबेट अच्छा चल रहा था।

श्रीमती वृंदा कारत: सर, मैं कहना चाहती हूँ ...**(व्यवधान)**...**मैं** आरोप लगाती हूँ ...**(व्यवधान)**...**सर**, इस बात को सुनिए। आज महाराष्ट्र में...(व्यवधान)...।

SHRI PRASANTA CHATTERJEE: What is this, Sir? ***...(Interruptions)...***

SHRI MATILAL SARKAR (Tripura): Why are they disrupting ***...(Interruptions)...***

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN (Tamil Nadu): Sir, this is a national issue and she is politicising it. ***...(Interruptions)...***

श्री उपसभापति: आप बोल रहे हैं, बोलिए, आप वहाँ क्यों लड़ने लग गईं?

श्रीमती वृंदा कारत: सर, फरवरी महीने से ये घटनाएँ घट रही हैं। जिस पार्टी ने और जिस नेता ने इसका नेतृत्व किया, उन्होंने कोर्ट में अंडरटेकिंग दी कि हम इस प्रकार का भाषण नहीं देंगे। फरवरी महीने से-अभी अक्तूबर में हम पहुँच गये, रोज़, हर हफ्ता, हर महीने, हर जगह, हर सभा में कोर्ट की उस अंडरटेकिंग का उल्लंघन हुआ और गैर-महाराष्ट्रियन को उकसाया गया है। सब को उकसाया गया है। उनको उकसाया गया है कि उनको मारो, पीटो। उस समय महाराष्ट्र की सरकार क्या कर रही थी, क्या उनकी सभा में तालियां बजा रही थी? उस समय वह क्या कर रही थी? वह क्यों नहीं कोर्ट में गई? उसने contempt of court में जाकर उनके खिलाफ एक्शन क्यों नहीं लिया? क्यों? इसलिए मेरा आरोप है, चाहे किसी को अच्छा लगे या बुरा लगे, कि यह वह संकीर्ण पॉलिटिक्स है, जो सोचते हैं कि "ए" और "बी" के बीच ळागड़ा करा कर हम राज़ करेंगे। यह है पॉलिटिक्स, यह है सुविधावादी पॉलिटिक्स, जो महाराष्ट्र की गठबंधन, कांग्रेस और एन0सी0पी0, यह गठबंधन...(व्यवधान)... यह आरोप है...(व्यवधान)... इसके अलावा, सर,...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: आप बोलिए।

SHRI A. VIJAYARAGHAVAN: Sir, this is a very serious issue and ***...(Interruptions)...***

श्रीमती वृंदा कारत: सुनिये सर, मैं कहना चाहती हूँ...(व्यवधान)...

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: Sir, she is politicizing a national issue ***...(Interruptions)...***

श्रीमती वृंदा कारत: सुनिये सर, मैं तीसरी बात कहना चाहती हूँ...(व्यवधान)...सर, मेरा concluding point यह है कि अगर हिन्दुस्तान के संविधान को बचाना है...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: देखिए, आप कुछ कहेंगे तो वह react करेंगे, फिर आप react करेंगी। क्या इस तरह से आपकी बात कही जाएगी? आप अपनी बात को तो कहिए।

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: Sir, this is a national issue. What is she talking about? ***...(Interruptions)...*** She is politicising the issue. ***...(Interruptions)...*** Sir, I am on a point of order. We are talking of a national issue and she is politicising a national issue. ***...(Interruptions)...***

SHRI PRASANTA CHATTERJEE: Everybody has the right to express opinion. ***...(Interruptions)...***

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please sit down. *...(Interruptions)...* Please sit down. *...(Interruptions)...*

SHRI PENUMALLI MADHU: Why is she interrupting? *...(Interruptions)...*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please sit down. *...(Interruptions)...* You may sit down and they would also sit down. *...(Interruptions)...* If you get up, they would also get up. If you interrupt, they would also get up. What you do, they would also follow. You are not exempted. Please sit down. *...(Interruptions)...*

SHRIMATI BRINDA KARAT: Sir, this is *...(Interruptions)...* Sir, I am not yielding. *...(Interruptions)...*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: What is your point of order?

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: Sir, this is a national issue *...(Interruptions)...*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I have to hear her out. *...(Interruptions)...*

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: Sir, you may kindly allow me*...(Interruptions)...*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: What is your point of order?

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: Sir, this is a national issue which everybody is concerned about. But when she talks about a State Government... *Interruptions)* He has permitted me to*...(Interruptions)...*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please, I am listening to her. I have permitted her to speak *...(Interruptions)...* इसे ज़ीरो आवर नहीं बोलते। आप इसको ज़ीरो आवर कहते हैं?

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: Sir, this is not Singur. *...(Interruptions)...*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Let me *...(Interruptions)...* I have to decide on a point of order. You cannot decide. I have to decide. *...(Interruptions)...*

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: Sir, under the rule where we cannot raise a State issue *...(Interruptions)...* She is talking about the motives of *...(Interruptions)...*

SHRI A. VIJAYARAGHAVAN: Sir, you have permitted it. *...(Interruptions)...*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please, let her speak. *...(Interruptions)...*

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: Sir, it is a national issue which you have permitted for discussion. Everybody is concerned about the attacks on non-Maharashtrians. But she is talking about motives of the State Government. The State Government is not here to defend. She cannot order... *...(Interruptions)...*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: It is a national issue. *...(Interruptions)...* We have taken it up. *...(Interruptions)...* The question is *...(Interruptions)...* If you want the State Government to reply *...(Interruptions)...*

SHRIMATI BRINDA KARAT: My third point is ***...(Interruptions)...***

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Hanumantha Rao, please sit down. ***...(Interruptions)...*** राजनीति प्रसाद जी, आप बैठिए। **...(व्यवधान)...**

SHRIMATI BRINDA KARAT: My concluding point is, सर, मेरा आखिरी प्वाइंट है कि इस देश के संविधान **...(व्यवधान)...**

श्री उपसभापति: राजनीति जी, आप बैठिए। **...(व्यवधान)...** डिबेट अच्छी चल रही है, सुनने दीजिए। **...(व्यवधान)...**

श्रीमती वृंदा कारत: देश के संविधान के बचाव की जिम्मेदारी केन्द्र सरकार की है और अगर हम मिलकर **...(व्यवधान)...**

श्री राजनीति प्रसाद (बिहार): सर, **...(व्यवधान)...**

श्री उपसभापति: नहीं, नहीं, यह कुछ नहीं होगा। **...(व्यवधान)...** प्लीज, प्लीज़। **...(व्यवधान)...** वृंदा जी को अपनी बात पूरी करने दीजिए। **...(व्यवधान)...** इंसिडेंटली आया है तो कुछ नहीं कर सकता है कोई भी। **...(व्यवधान)...**

श्रीमती वृंदा कारत: सर, केन्द्र सरकार की जिम्मेदारी है कि वह संविधान का बचाव करे **...(व्यवधान)...** सर, मैं कितनी बार कहूंगी। **...(व्यवधान)...**

श्री उपसभापति: मैं क्या करूं? **...(व्यवधान)...**

श्रीमती वृंदा कारत: सर, इनको बिठाइए। **...(व्यवधान)...** सर, देश के संविधान के बचाव की जिम्मेदारी केन्द्र सरकार की है। **...(व्यवधान)...**

श्री राजनीति प्रसाद: सर, एक मिनट। **...(व्यवधान)...**

श्री उपसभापति: राजनीति जी, आप बैठिए, आपको अपरच्युनिटी मिलेगी। **...(व्यवधान)...**

श्रीमती वृंदा कारत: आप देखिए कि खुद हमारी आदरणीय गृह मंत्री जी **...(व्यवधान)...**

श्री राजनीति प्रसाद: श्रीमती वृंदा कारत ने एक बार भी * का नाम नहीं लिया है। **...(व्यवधान)...**

श्रीमती वृंदा कारत: मैं यील्ड नहीं कर रही हूं। **...(व्यवधान)...**

SHRI A. VIJAYARAGHAVAN: How can he say like this? ***...(Interruptions)...*** What is he saying? ***...(Interruptions)...*** That is against the rule. ***...(Interruptions)...***

श्री उपसभापति : आप * का नाम निकाल दीजिए। **...(व्यवधान)...** Please don't take the name of the person who is not here to defend. You can talk about the incident, but not the name of the person. ***...(Interruptions)...*** Please don't take the name of the person. ***...(Interruptions)...***

श्रीमती वृंदा कारत: सर, हकीकत यह है कि देश के संविधान के बचाव की जिम्मेदारी **...(व्यवधान)...**

MR. DEPUTY CHAIRMAN: How can I allow? ***...(Interruptions)...*** She is not yielding. ***...(Interruptions)...*** वे यील्ड नहीं कर रही हैं, I cannot allow. ***...(Interruptions)...***

श्रीमती वृंदा कारत : केन्द्र सरकार के गृह मंत्री, हमारे आदरणीय शिवराज पाटिल जी **...(व्यवधान)...**

श्री उपसभापति: आप बैठिए, आपको अपरच्युनिटी दी जाएगी। **...(व्यवधान)...** आप बैठिए। **...(व्यवधान)...**

*Not recorded.

1.00 P.M.

श्रीमती वृंदा कारत: श्री शिवराज जी उस प्रदेश से हैं, जिस प्रदेश में यह सब हो रहा है। हमने पहले बताया कि पिछले छः महीने से इस प्रकार की घटनाएं घट रही हैं। मैं चाहती हूं कि सैंट्रल गवर्नमेंट के तौर पर हमारे गृह मंत्री जी हमें आज इस सदन में बताएं कि फरवरी महीने से अक्तूबर महीने तक जितनी घटनाएं लगातार महाराष्ट्र में गैर महाराष्ट्रियों के ऊपर, विशेषकर हिन्दी भाषी क्षेत्र के लोगों पर जो हमले हो रहे हैं, उन पर सैंट्रल गवर्नमेंट ने क्या किया? हमारे देश की ट्रेजिडी यह है, सर, कि यह माइनॉरिटी गवर्नमेंट है...**(व्यवधान)**...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You have to conclude. ***...(Interruptions)...*** You cannot go on indefinitely. ***...(Interruptions)...*** There is a time-limit. ***...(Interruptions)...***

SHRI A. VIJAYARAGHAVAN: No, Sir. ***...(Interruptions)...***

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Vijayaraghavan, please sit down. ***...(Interruptions)...*** You cannot come to support for everything***....(Interruptions)...***

श्रीमती वृंदा कारत: यह माइनॉरिटी गवर्नमेंट है, यह माइनॉरिटी गवर्नमेंट चल रही है और यह गवर्नमेंट असफल है, नाकाम है ...**(व्यवधान)**... जो आग लग रही है, उस आग को बुझाने में यह नाकाम है ...**(व्यवधान)**...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Nothing will go on record except what she is saying ***...(Interruptions)...*** आप अपनी बात समाप्त कीजिए।

श्रीमती वृंदा कारत: यह माइनॉरिटी गवर्नमेंट है, यह माइनॉरिटी गवर्नमेंट चल रही है और यह गवर्नमेंट असफल है, नाकाम है। ...**(व्यवधान)**... यह माइनॉरिटी गवर्नमेंट है, यह कैश फॉर वोट की गवर्नमेंट है और इसलिए यह सरकार असफल है, नाकाम है।

श्री उपसभापति: श्री शरद यादव। ...**(व्यवधान)**...

श्री वी0 हनुमंत राव (आंध्र प्रदेश): सर, ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति : आप बैठिए, प्लीज़ ... **(व्यवधान)**. Hon. Members, it is 1 o'clock. Would you like to break for lunch or skip the lunch hour?***...(Interruptions)...*** Okay, we shall skip the lunch hour***...(Interruptions)...***

SHRI SHANTARAM LAXMAN NAIK (Goa): Sir, I have a point of order***...(Interruptions)...*** Shrimati Brinda Karat has just said that this is a minority Government***...(Interruptions)...*** She has no right to say***...(Interruptions)...***

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please, Mr. Naik, अब छोड़िए ...**(व्यवधान)**... Now, Shri Sharad Yadav.

श्री शरद यादव (बिहार): उपसभापति जी, आज यह जो सवाल हम लोगों ने उठाया है, वह बहुत गंभीर है।

[उपसभाध्यक्ष (प्रो. पी.जे. कुरियन) पीठासीन हुए]

जिस तरह से वृंदा कारत जी अपनी बातें बोल रही थीं, वे लंबे समय से इस सदन में हैं, ये ऐसी बातें नहीं हैं कि जिन पर हम एक-दूसरे को रोकने लगें। आपका मौका आएगा, तो आप बोलेंगे, इनका मौका आएगा, तो ये लोग बोलेंगे। यह गंभीर सवाल उस महाराष्ट्र के बारे में है, जहां दादाभाई नौरोजी, तिलक जी, शिवाजी, सावरकर जी, बाबा साहब अम्बेडकर, वल्लभ भाई पटेल, सावित्री फुले, महात्मा फुले, इन सब लोगों की इतनी

बड़ी परंपरा है इस देश को बनाने में, इस देश को आज़ाद करने में। आज हम 60 बरसों की आज़ादी के चलते ऐसी परिस्थिति में पहुंच गए हैं कि यह सवाल 2 बरसों से चला हुआ है, वृंदा कारत जी कह रही थीं कि 6 महीने से चल रहा है, 6 महीने से नहीं, 2 बरसों से यह सवाल चला हुआ है और यह किसी जननेता की तरफ से नहीं चला हुआ है, यह सवाल ऐसे आदमी की तरफ से चला हुआ है, जिसके म्युनिसिपैलिटी में केवल 8 सदस्य हैं, यानी सेर में छटांक।

उपसभापति जी, इस देश में सवाल उठाया जा रहा है कि सरकार आपके हाथ में है और यह जो परिस्थिति बिगड़ रही है, इसके बारे में हम किससे कहें? दिल्ली में आपकी सरकार है, सूबे में आपकी सरकार है। इस आदमी ने कानून की, ताज़ीराते-हिन्द की जितनी धाराएं हैं, जितने भी कानून हैं, उन सबको तोड़ दिया है। संविधान का एक तरह से जैसा मखौल उड़ाया गया है, ऐसा देश में कभी नहीं हुआ। जब हुआ है, तो हमने कितनी तरह से भुगता है। जब भंजदेव खड़ा हुआ, तो स्वर्गीय द्वारका प्रसाद मिश्र को अपनी गद्दी छोड़नी पड़ी। वह हर बरस आज़ादी का ळांडा लगा देता था। उनसे पहले जो राज कर रहे थे, उन्होंने असावधानी बरती और स्वर्गीय द्वारका प्रसाद मिश्र को मुश्किल से एक बरस राज करते हुआ था, उनको अपनी गद्दी छोड़नी पड़ी। श्री मोती लाल वोरा जी तो उस सूबे के हैं, वे जानते हैं कि उस आदमी ने कितनी तबाही मचाई। यही सवाल बाद में इतिहास में आया। पंजाब में भिंडरावाला आया। भिण्डरावाले को नेस्तनाबूद करने के लिए हमारे देश के प्रधानमंत्री को कीमत देनी पड़ी। कितने लोगों को मन में चोट पहुंची। जो सिख हिन्दुस्तान की धरती पर युद्ध के प्रतीक माने जाते हैं, उनके धार्मिक स्थान पर जब attack हो गया तो उनका मन टूट गया और जब मन टूटता है तो देश टूटता है। उत्तर भारत के लोगों के साथ कुछ होता है तो लगातार लोग उसे बिहार का कह देते हैं, जब कि बिहार इतिहास की इतनी बड़ी धरती है, उसे हर तरफ से लोग कहते हैं कि बिहारी लोग थे। मैं गलत नहीं कह रहा हूँ। मैं जिस इलाके का रहने वाला हूँ, वहां के 15 लड़के भी थे, जिन्होंने हमें दौरे पर फोन किया। बिहार के लोग भी थे, उत्तर भारत के जितने लोग थे, उनमें बंगाल के लोग भी थे। वहां जितने परीक्षार्थी थे, बगैर सोचे, बगैर समझे उन पर हमला किया गया। मुंबई आर्थिक राजधानी इसलिए कहलाती है, गृह मंत्री जी, क्योंकि वहां हमारे पुरखों ने रिज़र्व बैंक रख दिया है और जहां रिज़र्व बैंक हो जाता है, वहां पूंजी का मैगनेट बन जाता है। दिल्ली सत्ता का मैगनेट है, तो रिज़र्व बैंक के चलते मुंबई पूंजी का मैगनेट है। मुंबई को किसी एक व्यक्ति ने नहीं बनाया है, मुंबई को अकेले जोशी जी ने नहीं बनाया है, बल्कि मुंबई को बनाने में कितने ही लोगों का खून और पसीना बहा हुआ है। मुंबई एक ऐसी जगह है, जिसका इतिहास आज़ादी की लड़ाई के इतिहास के पन्ने-पन्ने पर, हर सफे पर दर्ज है। हमको गौरव होता है जब बाबा साहब अम्बेदकर का नाम आता है, महात्मा फूले का नाम आता है। हमको तिलक महाराज का गौरव होता है, जिसने सबसे पहले कहा कि "आज़ादी हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है"... उस महाराष्ट्र के अंदर एक ऐसे व्यक्ति के ऊपर जिस पर सभी तरह की धाराएं लगनी चाहिए, आपने उसे आज गिरफ्तार किया है। आज मैं खड़ा होकर इसलिए कह रहा हूँ कि उस पर इतनी धाराएं लगनी चाहिए, इतने केस लगने चाहिए, चूंकि मैं सोचता हूँ कि इससे ज्यादा कानून तोड़ने वाला कोई दूसरा आदमी नहीं है।

उपसभाध्यक्ष (प्रो. पी.जे. कुरियन) : शरद जी, आप conclude कीजिए।

श्री शरद यादव : महोदय, मैं अपनी बात दो मिनट में कहना चाहता हूँ।

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): No, no. I have no problem. Let me remind ***...(Interruptions)...***

श्री एस.एस. अहलुवालिया (झारखंड): जिस विषय पर सदन का 70 मिनट खराब हो गया, उस पर सात मिनट में क्या हो गया **...(व्यवधान)...** ।

उपसभाध्यक्ष (प्रो. पी.जे. कुरियन): नहीं, नहीं, आप सुनिए ...**(व्यवधान)**... I Let me say. See, there are***...(Interruptions)...*** I will decide that.

श्री रुद्रनारायण पाणि (उड़ीसा): इस मुद्दे पर हम लोग भी बोलेंगे ...**(व्यवधान)**... I

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Mr. Pani, you please sit down. Please sit down. ***...(Interruptions)...*** Please don't create problem unnecessarily. ***...(Interruptions)...*** Mr. Pani, please. I will control the House. You sit down. ***...(Interruptions)...*** Hon. Members, I have no problem. I am only reminding that according to zero hour, rules say***...(Interruptions)...*** Please let me complete. I will give you time. Let me say.

SHRI PRASANTA CHATTERJEE: Mr. Vice-Chairman, Sir, this is***...(Interruptions)...***

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): No, no. Please. ***...(Interruptions)...*** What is this? It is only three-minutes per person. We can allow more time but the only thing is that***...(Interruptions)...***There is a long list here and I have to accommodate everybody. That is my concern.

SHRIMATI BRINDA KARAT: Sir, it will go on for the whole day. ***...(Interruptions)...***

SHRI YASHWANT SINHA: Sir, I have a point. ***...(Interruptions)...*** The House should not be deprived from discussing it. ***...(Interruptions)...***

SHRIMATI BRINDA KARAT: Sir, this is not***...(Interruptions)...***

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P. J. KURIEN): No, no. You had enough time. ***...(Interruptions)...*** Please.

श्री रुद्रनारायण पाणि: *

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): What is this, Mr. Pani? You are talking irrelevant things. Nothing will go on record. What Mr. Pani says will not go on record. ***...(Interruptions)...*** Please. See, this is not a structured discussion. This is a zero hour discussion. Please keep it in mind and reduce the time as much as you can. You have already taken seven minutes.

SHRIMATI BRINDA KARAT: Sir, today***...(Interruptions)...***

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Please. I am controlling. Don't interfere. ***...(Interruptions)...*** You wanted so much time, you have spoken that much. Now, don't interrupt others.

SHRI YASHWANT SINHA: Sir, it is for you to control the House, but you must listen to us. ***...(Interruptions)...***

श्री शरद यादव: उपसभाध्यक्ष जी, मैं यह कहना चाहता हूँ कि जो ट्रेजरी बेंचेज के मित्र हैं, उनसे मेरी विनती है, आपके हाथ में दोनों जगह की जिम्मेदारी नहीं होती तो कोई आपसे नहीं बोलता, देश आपके हाथ में है, सूबा आपके हाथ में है किसके पास जाएं हम? किससे कहें हम? वहां के जो मुख्य मंत्री हैं, मैंने उनसे

*Not recorded.

व्यक्तिगत तौर पर कहा कि आप क्या कर रहे हैं? यह आदमी कोई ऐसा नहीं है कि जिसके पीछे बहुत बड़ा जन-बल हो ! आप उसके पीछे जन-बल बनाना चाहते हैं और चुनाव को दिमाग में रखा जाता है, इसमें कोई शक नहीं है, लेकिन चुनाव को दिमाग में रखकर देश टूटने लगे, मुल्क टूटने लगे, मन टूटने लगे, तो उपसभाध्यक्ष जी, उत्तर भारत में हर सूबे के लोग रहते हैं। मैं गर्व से कहता हूं कि किसी एक तरह का भी, एक भी गलती या एक भी गुनाह किसी के साथ हो गया हो, तो मैं सदन को छोड़कर जाने को तैयार हूं। दिल चौड़ा है ! दिल चौड़ा है, तो मन चौड़ा है। इसका मतलब यह नहीं कि आप संकीर्णता के दायरे में लोगों को लाठियों से, हाथों से, पैरों से उनको कुचलने का, उनको अपमानित करने का काम करें। गृह मंत्री जी, जो देश है, वह इकबाल से चलता है। आपके पास फौज, पुलिस और गोली इसलिए नहीं दी है कि यह ड्राइंग रूम में टांगने की कोई चीज़ है। कानून को जब कोई आदमी कुचलने लगे, तो कानून का काम है कि उस आदमी को केवल कुचलने का काम ही नहीं करे, बल्कि ऐसा काम करे कि दुनिया उसे देखकर आगे कानून तोड़ने की हिम्मत ही न करे। मुम्बई को बनाने में और मुम्बई ने देश की आज़ादी में, महाराष्ट्र ने देश की आज़ादी में - उसका गौरव अकेले मुम्बई के लोग नहीं, महाराष्ट्र के लोग नहीं, हम सब लोग हैं। हम तो महाराष्ट्र के बिल्कुल बाजू में जबलपुर के रहने वाले लोग हैं। मेरे यहां से महाराष्ट्र के दो एम.पी. जीते। जितनी आबादी महाराष्ट्र में रहती है, उसके बराबर आबादी बाहर रहती है। ...**(समय की घंटी)**... यह जिस तरह का मामला बन रहा है ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Sharadji, please conclude.

श्री शरद यादव: इसमें देश में ...**(व्यवधान)**...

श्री लालू प्रसाद: मधु लिमये बिहार से जीते।

श्री शरद यादव: मधु लिमये जीते, जॉर्ज फर्नांडीज़ जीते। ...**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष (प्रो. पी.जे. कुरियन): शरद यादव जी... Please conclude.

श्री शरद यादव : उपसभाध्यक्ष जी, सीधी बात है, मेरा थोड़ा सा निवेदन सुनिए।

उपसभाध्यक्ष (प्रो पी.जे. कुरियन): सुनते हैं, पूरा सुनते हैं।

श्री शरद यादव : महोदय, मैं कहना चाहता हूं कि किससे कहें? आप नाराज़ न हों। जिसके पास सरकार होती है, वह गुस्सा नहीं होता है। गुस्सा होने का हक हमारा है। गुस्सा होने का हक यशवंत सिन्हा का है, वृंदा कारत का है। हम तो निहत्थे लोग हैं, केवल बोल ही सकते हैं। हमारी बोली का, हमारी सारी वेदना को समझने का काम कीजिए। दो वर्ष हो गए, वह आदमी ताली ठोककर कहता है कि गिरफ्तार करके दिखाओ। सौ करोड़ का देश, डेढ़ करोड़ की फौज! वह आदमी कह रहा है। हम तो राजनीति में आ गए, वरना अगर मुम्बई में होते, तो जरूर उसकी इस बात को सहने का काम नहीं करते, लेकिन मैं आपसे कहना चाहता हूं कि यह दुखड़ा किससे रोया जाए? किससे कहा जाए? आपसे कहते हैं, तो आप लोग गुस्सा होते हैं, नाराज़ होते हैं। आपको राज करने के लिए दिया है, राज ठीक से कीजिए। मुल्क को तबाह और बरबाद करके छोड़कर मत जाइए। मुल्क को एक मुट्ठी में जोड़कर ताकत के साथ जाइए। आप सरकार में रहें या न रहें, लेकिन अगर मुल्क रहेगा, तो आप फिर वापस आएंगे, इसलिए अंत में मैं आपसे कहना चाहता हूं - Governor get out. ...**(समय की घंटी)**... इसके सिवा आपको कहने के लिए मेरे पास और कोई शब्द नहीं हैं। आपको मजबूती से, ताकत के साथ इस आदमी के ऊपर जो अभी दो-चार केस लगाए हैं, बाकी सारे केस, जितनी तरह के केस हैं, वे सारे केस लगाने का काम कीजिए। यह जिम्मेदारी आपकी है। ...**(समय की घंटी)**... इन्हीं बातों के साथ, मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि मैंने आपका ज्यादा समय लिया।

श्री यशवंत सिन्हा: उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं अपनी बात की शुरुआत "जय महाराष्ट्र" कहकर करना चाहता हूं। "जय महाराष्ट्र" इसलिए कि मैं तो एकीकृत बिहार में पैदा हुआ, वहीं पला, बड़ा हुआ, लेकिन बचपन से लेकर आज तक जिन महान लोगों का नाम अभी शरद यादव जी ने लिया, वे हमारे सामने, जैसे सूर्य की किरणें हम ग्रहण करते थे, वैसे उनके प्रभाव को हमने ग्रहण किया। महोदय, मैं मानता हूं कि देश के किसी भी कोने में कोई भी व्यक्ति चाहे स्वतंत्रता के पहले, चाहे स्वतंत्रता के बाद, चाहे आज पैदा हुआ हो वह उन नेताओं से, उन मनीषियों से प्रेरणा लेता है, जिन्होंने इस देश को आज़ाद करने में ही नहीं बल्कि एक करने में अपनी भूमिका निभाई। यहां पर सरदार वल्लभ भाई पटेल का नाम लिया गया। वे भी एकीकृत महाराष्ट्र, बॉम्बे प्रेज़ीडेंसी की ही संतान थे और उन्होंने देश को एक करने में जो भूमिका निभाई, आज देश का इतिहास उसको स्वीकार करता है। उसी महाराष्ट्र में आज के दिन एक इतना घृणित आंदोलन, इतना घृणित काम चल रहा है। जैसा शरद जी ने कहा, दो वर्षों से लगातार इस प्रकार की बात हो रही है और हम देख रहे हैं कि जैसे पूरा देश असहाय है, जैसे हम लाचार हैं, हम कुछ कर ही नहीं सकते। महोदय, वैसे हम आज महाराष्ट्र के ऊपर चर्चा कर रहे हैं लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि क्या देश के दूसरे भाग उससे अछूते हैं? क्या असम आज उससे अछूता है? क्या असम में जो लोग बाहर के हैं, उनको मौत के घाट नहीं उतारा जा रहा है, उनको वहां से निष्कासित नहीं किया जा रहा है? महोदय, इस देश की कुछ परम्पराएं रही हैं और हम सब उन परम्पराओं पर गर्व करते हैं। हमारा इतिहास तो ऐसा है कि हम आत्मसात कर लेते हैं। देश की बात छोड़ दीजिए, सूबों की बात छोड़ दीजिए - जो बाहर से आता है, उसको भी हम स्वीकार कर लेते हैं और अपने में मिला लेते हैं। हम लोगों ने संविधान बनाया। उस संविधान में हम लोगों को आज के दिन यह अधिकार है कि अगर हमारा नाम चुनाव की लिस्ट में है, मतदाता सूची में है तो हम देश के किसी भी भाग से खड़े हो सकते हैं। यह अधिकार हमें संविधान ने दिया है। अब राज्य सभा में आने के लिए यह भी आवश्यक नहीं है कि हम किसी एक राज्य के मतदाता हों। अगर हम देश के किसी भी राज्य में मतदाता हैं तो हम इस सदन में आ सकते हैं। यह स्वतंत्रता हमें हमारे संविधान ने दी है। हमें हमारे संविधान ने यह भी स्वतंत्रता दी है कि हम देश के किसी कोने में जाकर पूरे नागरिक अधिकारों के साथ वहां रह सकते हैं। हम किसी नौकरी को वहां पा सकते हैं। अगर रेलवे मंत्रालय ने वहां पर अपना परीक्षा केंद्र रखा तो संविधान की, कानून की इन्हीं धाराओं के अंतर्गत रखा ताकि पूरे देश के लोग वहां पर आएं, पूरे देश के परीक्षार्थी आएं और उस परीक्षा केन्द्र में उपस्थित होकर परीक्षा दें - फिर उनका चयन होगा या नहीं होगा। यह साठ साल से चल रहा है। यह स्वतंत्रता हमारे देश में है। इसीलिए आज हमारे देश में - चाहे बिहार हो, चाहे झारखंड हो, चाहे उत्तर प्रदेश हो, चाहे दिल्ली हो - लोगों को कहीं भी जाकर रहने का हक है। मैं तो यह कहना चाहूंगा कि मुम्बई फाइनेंशियल केपिटल ऑफ इंडिया है। वहां तो सब लोगों को जाकर रहने का हक है ही। उन्हें वहां रहने का हक है, वहां नौकरी करने का हक है ही। आज छोटे-छोटे स्थानों में, मैं झारखंड से आता हूं, हमारे यहां कोयला की खदाने हैं, जमशेदपुर की स्टील फैक्टरी है, वहां बहुत सारे ऐसे कारखाने लगे हुए हैं जिसमें देश के हर कोने से लोग आकर नौकरी करते हैं। छोटी से छोटी, क्लास-4 और क्लास-3 की नौकरियां भी बिहार और झारखंड के बाहर के लोगों को वहां पर उपलब्ध करायी जाती हैं। हमारे अंदर वह संकीर्णता नहीं है। हमारे अंदर वह भावना नहीं है कि बाहर से जो लोग आए हैं उनको निकालकर बाहर करो, उनको मत आने दो। यह महान महाराष्ट्र, जिसमें देश को गौरवान्वित करने वाले इतने सारे लोग पैदा हुए हैं, वह महाराष्ट्र आज इस गर्त में गिर गया है। मैं, यहां सदन में जितने लोग बैठे हैं, उन सबसे यह अपील करना चाहता हूं कि आज महाराष्ट्र की यह स्थिति हो गयी है। और कहीं कुछ होता तो हम समझ सकते थे कि संकीर्णता है लेकिन महाराष्ट्र में ऐसा हो रहा है? हमारे गृह मंत्री

जी स्वयं महाराष्ट्र से आते हैं। महोदय, जो जिस प्रदेश से आता है, जिस सूबे से आता है, वह उस सूबे के बारे में ज्यादा जानकारी रखता ही है। लालू प्रसाद जी बिहार के बारे में ज्यादा जानकारी रखते हैं, मैं झारखंड और बिहार के बारे में ज्यादा जानकारी रखता हूं। हमारे सूबे में अगर कोई घटना घटती है तो जाहिर है कि सरकारी सूत्रों के अलावा भी हमें उसमें सूचना मिलती है। इतने दिनों से यह चल रहा है, इतने दिनों से वहां पर तूफान खड़ा करने की कोशिश हो रही है - 'a storm in a teacup' जिसको कहते हैं। वहां लोगों की पिटाई हो रही है, बार-बार पिटाई हो रही है, न केवल बिहारी झारखंडियों की बल्कि जितने लोग महाराष्ट्र के बाहर से वहां पर आ रहे हैं, उन सबकी पिटाई हो रही है। यह कौन व्यक्ति है, यह कौन सा संगठन है जिसमें आज इतनी ताकत हो गयी? उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं कहना चाहता हूं कि कितनी ताकत हो गई कि वह देश की एकता को, देश की अखंडता को चुनौती दे रहा है और हम यहां बैठकर टुकुर-टुकुर ताक रहे हैं। यह सदन यहां पर मूकदर्शक बना रहेगा तथा पूरी भारत सरकार की ताकत का उपयोग नहीं किया जाएगा। उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से गृह मंत्री महोदय से पूछना चाहता हूं कि संविधान में Article-355 है। Article-355 का उपयोग दुरुपयोग अभी हाल के दिनों में किया है। तो क्या कार्रवाई की गई महाराष्ट्र सरकार के खिलाफ? क्या Article-355 में आपने कोई एडवाइजरी भेजा, कोई डायरेक्शन भेजा? आज के दिन जो यहां पर स्थिति बनी है, मैं गंभीरता के साथ कहना चाहता हूं कि वह हमारे दिलों को तोड़ने वाली एक स्थिति बनी है और जब दिल टूटते हैं तब देश टूटता है। इसलिए जैसा शरद जी ने कहा, मैं कहना चाहता हूं कि ऐसी ताकतों को कुचलने का काम करना चाहिए और जितनी भी ताकत इस देश में है, पूरी ताकत लगाकर हमको ऐसी शक्तियों को इस ढंग से परास्त करना पड़ेगा कि वे दोबारा सिर उठाने का दुस्साहस नहीं करें। इसलिए मैं गृह मंत्री महोदय से कहना चाहता हूं कि सरकारें आती हैं, सरकारें जाती हैं यह हमारे देश की एक परम्परा है, हम एक प्रजातंत्र हैं। लेकिन कुछ सवाल ऐसे उठते हैं जिसमें सारे दलों को, सारी ताकतों को एक होकर उसका मुकाबला करना पड़ेगा। मैं आज आपके माध्यम से इस सदन से, इस देश से अपील करना चाहता हूं कि हम सब एक होकर इस तरह की जो एक कुत्सित शक्ति है उसका मुकाबला करें, उसको कुचलें, उसको परास्त करें, ताकि यह देश एक रह सके और इसका भविष्य सुन्दर हो। धन्यवाद।

श्री लालू प्रसाद: सर, मेरी एक प्रार्थना है। यहां पर काफी माननीय नेता बोले हैं। लेकिन देश यह जानना चाहता हूं कि महाराष्ट्र के जो एम0पीज0 हैं, लीडर्स हैं उनको देश के लोग सुनना चाहते हैं। क्या उनमें से बोलने के लिए कोई नहीं है, यह हम लोग जानना चाहते हैं।

श्री विजय कुमार रूपाणी (गुजरात): हम गृह मंत्री को सुनना चाहते हैं, गृह मंत्री क्या कर रहे हैं। इस पर सरकार जिम्मेदारी ले।...(व्यवधान)...

श्री मनोहर जोशी (महाराष्ट्र): जितना जल्दी मुळो बोलने का मौका मिलेगा तो इस विषय में जो गलतफहमियां हैं वह मैं दूर सकता हूं। इसलिए मेरी यह प्रार्थना है।

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): I will give you time. Please. Next, Shri Rajniti Prasad.

SHRI SHANTARAM LAXMAN NAIK: Sir, I have given notice regarding Orissa. ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Not now. That is a separate issue. You give separate notice for that. ...*(Interruptions)*... Please, you give a separate notice for that. ...*(Interruptions)*... No, no. ...*(Interruptions)*... Shri Rajniti Prasad. You speak on this subject only.

श्री राजनीति प्रसाद: महोदय, मुझे आज से 40-42 साल पहले की वह घटना याद है कि मधु लिमये जो महाराष्ट्र में सतारा जिले के रहने वाले थे, हम लोगों ने उनको मुंगेर से दो बार और बांका से दो बार चुनाव जिताया। हम लोगों को याद नहीं है कि जो आदमी मुम्बई से आया वह मराठी था। आज भी हम मधु लिमये जी, जो मराठा थे, का जन्म दिन मनाते हैं तथा उनके स्वर्गवास होने के बाद उनकी श्रद्धांजली सभा भी लगातार आमंत्रित करते हैं। मैं यह कहना चाह रहा हूं तथा शरद यादव जी भी जानते हैं, मेरी यह व्यथा है तथा मुळाको यह अफसोस भी लग रहा है कि राज ठाकरे ने यह कहा है केवल महाराष्ट्र दिवस यहां मनेगा।

श्री यशवंत सिन्हा: उनका यहां नाम लेकर महिमा मंडित मत कीजिए।

श्री राजनीति प्रसाद: नाम क्यों नहीं लेंगे। महिमा मंडित का क्या सवाल है। उन्होंने कहा है कि यहां केवल महाराष्ट्र दिवस ही मनेगा। अखबार ने लिखा है कि क्या इस देश में, वह महाराष्ट्र में 15 अगस्त और 26 जनवरी नहीं मनायेंगे ? अगर ऐसी बात आती है, तो क्या 153 या 425 जो धाराएं उन पर लगाई गई हैं, वहीं केवल उपयुक्त हैं या जो आईपीसी की धारा 121 है, वह भी लगनी चाहिए। क्योंकि यह देशद्रोह का मामला है। अगर वह यह कह रहे हैं कि यहां पर केवल मराठी लोग ही रहेंगे, तो यह देशद्रोह का मामला है, तो वहां की सरकार उन पर देशद्रोह की धारा, आईपीसी की धारा 121 क्यों नहीं लगाती है ? क्यों उनको महिमामंडित करने के लिए रात में ढाई बजे पकड़ते हैं, पता नहीं अब उनको जमानत भी मिल गई हो, क्योंकि सभी जमानती दफा लगी हैं।

उपसभाध्यक्ष जी, मैं आपसे यह कहना चाहता हूं कि अगर कोई इस तरह की बात करेगा, तो यह देश नहीं चलेगा। अभी श्रीमती वृंदा कारत जी कह रही थीं कि किसने कहा कि वह * है, किसने कहा नहीं, हमारे रेल मंत्री जी ने कहा है। जैसे ही वहां पर हमला हुआ, वैसे ही उन्होंने कहा कि यह * का काम है और लगातार कह रहे हैं, उन्होंने यह भी कहा, खुलेतौर पर कहा कि मैं वहां पर छठ पूजा करने के लिए जाऊंगा। जब उन्होंने यह कहा कि मैं वहां पर छठ पूजा करने के लिए जाऊंगा।...**(व्यवधान)**...

श्री यशवंत सिन्हा: लालू जी वहां पर छठ पूजा करने जायेंगे ? ...**(व्यवधान)**...

श्री राजनीति प्रसाद: आप रूकिए, रूकिए। ...**(व्यवधान)**... जब उन्होंने कहा कि मैं छठ पूजा करने जाऊंगा, तो उसने क्या कहा, उसके बारे में आपको मालूम है। उसने कहा कि जिंदा बचकर नहीं जाओगे, इस तरह की बात करने वाला यह आदमी है। जो आदमी इस तरह की बात करता हो, देश को बांटने वाली बात करता हो ...**(व्यवधान)**...

श्रीमती वृंदा कारत: सर, अभी इनको पता नहीं है कि * को हमारे देश के कानून में छूट दी जाती है, उसका अपराध अपराध नहीं माना जाता है, इसलिए जो उनको * कहते हैं, वह छिपाने के लिए बात करते हैं।...**(व्यवधान)**...

श्री शिवानन्द तिवारी (बिहार): सर, मामले की गंभीरता को समाप्त करने की बात की जा रही है। ...**(व्यवधान)**...

---

*Expunged as ordered by the Chair.

उपसभाध्यक्ष (प्रो0 पी0जे0 कुरियन): प्लीज, प्लीज। आप बोलिए, आप बोलिए।

श्री राजनीति प्रसाद: सर, मुझे बोलने दिया जाए। मैं कभी किसी को बोलने से रोकता नहीं हूं। ...**(व्यवधान)**...

श्री राजीव प्रताप रूडी (बिहार): सर, यहां पर बैठकर उकसाने की जरूरत नहीं है। ...**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष (प्रो0 पी0जे0 कुरियन): रूडी जी, आप बैठ जाइए। आप बैठ जाइए। ...**(व्यवधान)**...

श्री राजनीति प्रसाद: सर, सुप्रीम कोर्ट ने कहा ...**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष (प्रो0 पी0जे0 कुरियन): आप चेयर को एड्रेस कीजिए। ...**(व्यवधान)**...

श्री राजनीति प्रसाद: सर, सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि ऐसे आदमी पर, उसकी पार्टी पर रोक लगानी चाहिए, इलेक्शन कमीशन को कहा है कि इस पर रोक लगानी चाहिए। ये लोग सुप्रीम कोर्ट के आदेश को भी मानने के लिए तैयार नहीं हैं। सर, हमारे गृह मंत्री जी यहां पर बैठे हैं। श्री लालू यादव जी ने सही कहा कि जो महाराष्ट्र के लोग हैं, जो मराठा लोग हैं, एम0पी0 हैं, उनका भी बयान आना चाहिए। मैं सीपीएम के लोगों को कहना चाहता हूं कि लालू यादव ने जो बयान दिया, वह अखबारों में आया है, आपका कौन-सा ऐसा बयान आया, क्या किसी टीवी पर बयान आया, आप उसके बारे में बता दीजिए। ...**(व्यवधान)**... इसलिए मैं कह रहा हूं। ...**(व्यवधान)**... आप मुझे बोलने दीजिए। ...**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष (प्रो0 पी0जे0 कुरियन): इश्यु को डायवर्ट मत कीजिए। ...**(व्यवधान)**...

श्री राजनीति प्रसाद: सर, मैं कहना चाहता हूं कि इस देश को एक रखने की जिम्मेदारी हम सब की है। हम लोगों ने खालिस्तान के आंदोलन को खत्म कर दिया। ...**(समय की घंटी)**... उपसभाध्यक्ष जी, मैं यह कहना चाहूंगा कि यह नया उग्रवाद पैदा किया है, यह आतंकवाद से ज्यादा खतरनाक है, जो देश को तोड़ने की बात करता है..।

उपसभाध्यक्ष (प्रो0 पी0जे0 कुरियन): अब आप समाप्त कीजिए।

श्री राजनीति प्रसाद: सर, एक मिनट और बोलने दीजिए। जिस तरह से हम लोगों ने पंजाब में खालिस्तान को खत्म किया, उसी तरह से इसको भी खत्म करने का उपाय करना चाहिए। उस पर केवल जमानती दफा में नहीं, बल्कि उस पर देशद्रोह का मुकदमा चलना चाहिए। यह आदमी ऐसा * है कि इसने पूरे हिन्दुस्तान को, संविधान को झकझोर कर रख दिया है। इसलिए मैं चाहूंगा कि जो मराठा के एम0पी0 लोग हैं, वे लोग भी अपना वक्तव्य दें। ...**(व्यवधान)**...एक मिनट, एक मिनट।...**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष (प्रो0 पी0जे0 कुरियन): हो गया, हो गया। ...**(व्यवधान)**...

श्री राजनीति प्रसाद: जो महाराष्ट्र के लोग हैं, जो एमपी हैं, उनके अंदर उनके खिलाफ बोलने का साहस नहीं है। एक ही आदमी को साहस हुआ है, रेल मंत्री ने सरकारी तौर पर ऐलान किया है कि यह * है, इस पर कानूनी कार्यवाही होनी चाहिए।

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Okay.

श्री राजनीति प्रसाद: उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं यह कहना चाहता हूं कि ...**(व्यवधान)**... इस आदमी को सबक सिखाने की जरूरत है। यहां पर हमारे गृह मंत्री साहब बैठे हैं, मैं उनसे यह कहना चाहूंगा कि यह

---

*Expunged as ordered by the Chair.

आतंकवादियों से भी ज्यादा खतरनाक हो गया है। मैं यह भी कहना चाहूंगा कि बिहार के लोगों को जितना तबाह और बर्बाद इन लोगों ने किया है, उतना बर्बाद हम भी कर सकते हैं।...**(व्यवधान)**...रुकिए, रुकिए, हम भी कर सकते हैं। ...**(व्यवधान)**... अरे, रुकिए ना। ...**(व्यवधान)**...

श्रीमती वृंदा कारत: सर, यह बहुत गलत बोल रहे हैं। ...**(व्यवधान)**... Sir, we won't allow this. ***...(Interruptions)...***

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Don't divert the issue. Please sit down. ***...(Interruptions)...*** Please don't divert the issue. ***...(Interruptions)...*** Rajniti Prasadji, why do you divert the issue? ***...(Interruptions)...***

श्री राजनीति प्रसाद: उपसभाध्यक्ष महोदय, हम लोगों ने ऐसा कोई काम नहीं किया है।...**(व्यवधान)**.... हम लोगों ने मराठा, महाराष्ट्र के लोगों को सम्मान देने का काम किया है। ...**(व्यवधान)**... हम लोगों ने बिहार में इन लोगों को विशेष सुविधा देने का काम किया है। ...**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष (प्रो0 पी0जे0 कुरियन): बस, बस बैठिए। ...**(व्यवधान)**...**You** made your point .. बैठिए, बैठिए। ...**(व्यवधान)**... Please take your seat. That is enough. ***...(Interruptions)...*** बैठिए, बैठिए। ***...(Interruptions)...*** Okay, okay.

श्री राजनीति प्रसाद: हम लोगों न उनको सम्मान दिया है। ... ...**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष (प्रो0 पी0जे0 कुरियन): बैठिए, बैठिए। Please sit down. ...**(व्यवधान)**...

श्री राजनीति प्रसाद: मैंने यह नहीं कहा है। ... ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): That is enough. Take your seat. ***...(Interruptions)...***

श्री राजनीति प्रसाद: रुकिए, मैंने यह नहीं कहा है। ...**(व्यवधान)**...**मैंने** कहा है कि जो महाराष्ट्र के लोग बिहार में रहते हैं, हम उनका सम्मान करते हैं। हम लोग उनका गाना सुनते हैं, उनकी फिल्म देखते हैं। ...**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष **(प्रो0 पी0जे0 कुरियन)**: बैठिए। ***...(Interruptions)...*** You are now repeating it.

श्री राजनीति प्रसाद: हम लोग बहुत फिल्म देखते हैं, जो मुम्बई से फिल्म आती हैं, सब देखते हैं। हम लोग कोई गड़बड़ नहीं करते हैं। ...**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष (प्रो0 पी0जे0 कुरियन): बस बैठिए। Okay. ***...(Interruptions)...*** बैठो, बाबा । ...**(व्यवधान)**... I will give you time. Please wait. ***...(Interruptions)...***

SHRI DIGVIJAY SINGH (Jharkhand): Sir, there are more Zero Hour issues. ***...(Interruptions)...***

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): All right. There are names already given in the List. You have given the name now. I will consider it.

SHRI DIGVIJAY SINGH: No, no; I gave it earlier. Sir, I gave it yesterday.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Okay. Don't worry. Now, Shri Manohar Joshi ***...(Interruptions)...***

SHRI DIGVIJAY SINGH: Sir, I should speak first. ***...(Interruptions)...***

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): But I have a request to make. You see that it is meant for everyone. 'To every hon. Member' I am saying.

SHRI DIGVIJAY SINGH: No problem, Sir. I agree with you.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): See this is an issue which concerns... ...*(Interruptions)*...

SHRI DIGVIJAY SINGH: Sir, I agree with you.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): You listen to me. Not only 'you'; but to every hon. Member, I am saying. When you speak, there are two things. ...*(Interruptions)*... I got your chit. I will give you time. But this is a subject where everyone is concerned. Everyone is concerned. So, please keep the level of the discussion high.

SHRI DIGVIJAY SINGH: Agreed, Sir.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Another point is...*(Interruptions)*...

SHRI DIGVIJAY SINGH: I agree, Sir.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): One more point. ...*(Interruptions)*... See, according to the rules...*(Interruptions)*... Please listen. ...*(Interruptions)*... Rajivji should listen to what I say. According to the rules, you cannot take the name of a person who cannot come here and defend himself. Therefore, the name which he mentioned; the name of that person who cannot come here and defend himself will be deleted. ...*(Interruptions)*... But I have to go by the rules. ...*(Interruptions)*... You can say 'the leader of the party'; you can mention the name of the party. ...*(Interruptions)*...

SHRI RAJNITI PRASAD: Okay, Sir.

उपसभाध्यक्ष (प्रो0 पी0जे0 कुरियन): बैठिए, बैठिए ...*(Interruptions)*... Rajivji, you sit down.

श्री राजनीति प्रसाद: आखिर देखिए, किस विषय पर बहस हो रही है। ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): I am not casting an aspersion on you. Please sit down....*(Interruptions)*...

श्री राजनीति प्रसाद: आप किस पर बहस कर रहे हैं? किसी मूर्ति पर बहस हो रही है क्या?

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): What is this? This is not an aspersion on you. Sit down. I am making a general statement. ...*(Interruptions)*...

श्री राजनीति प्रसाद: सभी लोग नाम ले रहे हैं...**(व्यवधान)**.... सभी लोग बात कर रहे हैं, तो हमें क्यों नहीं नाम लेने दे रहे हैं! ...**(व्यवधान)**...**राज** ठाकरे पर बहस हो रही है, किस पर बहस हो रही है?...(व्यवधान)...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): You, please, take your seat. ...*(Interruptions)*... Please sit down. ...*(Interruptions)*... Don't waste time....*(Interruptions)*...

श्री राजीव प्रताप रूडी: सर, ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Mr. Rudy, don't waste time. *...(Interruptions)...* Mr. Rudy, don't waste time. *...(Interruptions)...* Shri Manohar Joshi. *...(Interruptions)...* I have given the floor to him, please.

श्री राजीव प्रताप रूडी: सर, ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Mr. Rudy, sit down. Please don't do that. *...(Interruptions)...* Mr. Joshi, you start speaking. *...(Interruptions)... ...(Interruptions)...* I will give you time. Don't worry.

श्री राजीव प्रताप रूडी: सर, ये लोगों को भड़काने का काम कर रहे हैं। ...**(व्यवधान)**...**ये** भड़काना चाहते हैं और राजनीति करना चाहते हैं। ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Mr. Rudy, why are you wasting time? *...(Interruptions)...*

श्री मनोहर जोशी (महाराष्ट्र) : महोदय, आपने मुळो बोलने का मौका दिया, इसलिए मैं आपका बहुत आभारी हूं। मैं तो चाहता था कि मुळा से पहले वक्ताओं ने जो भाषण दिए हैं, उनसे पहले यदि मुझे मौका मिलता तो और अच्छा होता। मैं उस समय मुंबई में था, मैंने स्थिति देखी है, क्या हुआ है, इसमें बारे में मुझे ठीक जानकारी है, इसलिए मैं इस विषय पर बोलना चाहता हूं। सर, जो रिक्रूटमेंट हो रही थी, वह असिस्टेंट स्टेशन मास्टर, गुड्स क्लर्क और रिजर्वेशन क्लर्क तीनों पोस्ट पर भर्ती करने के लिए बाहर के और महाराष्ट्र के लोग गए थे। इस विषय का मूल कारण यही है। जहां तक मैं कहूं तो मैं अपनी पार्टी के बारे में कहूंगा, दूसरे संगठन के बारे में नहीं कहूंगा। मेरी पार्टी का प्रश्न और मेरी पार्टी का विषय नया नहीं है। पिछले पैंतालीस साल से इसी विषय पर शिव सेना का निर्माण हुआ कि जहां जो लोग रहते हैं, जिनका जहां जन्म हुआ है, उन्हें नौकरी में प्राथमिकता, प्रॉयोरिटी मिलनी चाहिए। शिव सेना इसी विषय पर लड़ रही है और कई जगहों पर लोगों ने यह सुना है और माना भी है। महाराष्ट्र सरकार ने भी यह माना है कि जो लोग जहां के स्थानीय लोग हैं, उनको नौकरी मिलनी चाहिए। इसमें मुझे कोई गलत बात दिखाई नहीं देती है। इसीलिए मैं शुरू में यह कहना चाहता हूं कि इसका क्या रास्ता हो सकता है, इस पर सीरीयसली सोचना चाहिए। यह केवल मेरी भावना नहीं है, जब से लिंग्विस्टिक स्टेट्स बने हैं, तभी से लोगों की यह भावना है कि हमारे राज्य में, हमारे लोगों को, हमारी भाषा बोलने वाले लोगों को प्राथमिकता मिलनी चाहिए। मैंने सुना और देखा है कि ...**(व्यवधान) ।**

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Don't interrupt, please. *...(Interruptions)...* Don't interrupt, please.

श्री मनोहर जोशी: सर, इन्हें रोकिए...(व्यवधान)...

श्री राजनीति प्रसाद: ये बहुत काबिल आदमी हैं, हमारे स्पीकर रहे हैं...**(व्यवधान)**...अच्छे तरीके से बोलते हैं ...**(व्यवधान)**...

श्री मनोहर जोशी: प्रश्न यह है कि जब बाहर के लोग यहां आते हैं तो उनकी पिटाई करने से कोई समाधान नहीं होगा। मेरा मत यही है कि उनकी पिटाई नहीं होनी चाहिए। लेकिन यह जो मूल कारण है, इस कारण को भी देखने की सख्त जरूरत है। मुंबई में जो हुआ, स्टेशन पर कई लोग सोये हुए थे, उनकी पिटाई करने की कोशिश की गई, उन्हें उठाकर मारा गया, मैं ऐसी बात का समर्थन कभी नहीं करता हूं, लेकिन आपको इसका मूल कारण देखने की आवश्यकता है। जब मैं इस तरह से देखता हूं तो मैं सदन की

इन्फॉर्मेशन के लिए कुछ आंकड़े देना चाहता हूं कि गत वर्ष रेलवे बोर्ड की परीक्षा में 55 हजार मराठी विद्यार्थियों ने परीक्षा दी थी और उसमें से केलव 54 उम्मीदवार उत्तीर्ण घोषित किए गए थे। क्या लोगों को इस बात पर गुस्सा नहीं आएगा? उसके बाद भी जो परीक्षा हुई, उसमें 1,25,000 लोगों में से केवल 82 उम्मीदवार उत्तीर्ण घोषित किए गए...(व्यवधान)...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Mr. Manohar Joshi, you are a very seasoned parliamentarian. You were the Speaker of the Lok Sabha also. You know that you can't raise an allegation here. If you want to raise an allegation... ...*(Interruptions)*...

SHRI MANOHAR JOSHI: What allegation did I make? ...*(Interruptions)*... I have not made any allegations against anybody. ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): No, please. Now, please let me complete. ...*(Interruptions)*...

SHRI MANOHAR JOSHI: I have not made any allegations against anybody and I will not make any because there is no need. ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Okay. Now, you continue.

श्री लालू प्रसाद: सर, माननीय जोशी जी ने जो भाषण प्रारंभ किया, उसमें शुरू से ही संकीर्णता, क्षेत्रीयता और कम्युनलिज्म झलकता है। उसमें से सांप्रदायिकता की एक बू भी आ रही है और आप लोग उसको फैन्ड भी कर रहे हैं। हम लोग ऐसी अपेक्षा नहीं करते थे। महाराष्ट्र हमारा है, बिहार महाराष्ट्रियनों का है, यह देश सभी का है और हमने किसी नियम में कोई परिवर्तन नहीं किया है। आपके लोग आए थे। बच्चों को पढ़ा दें, बच्चे पढ़कर बच्चों को पराजित कर दें, आप मेरिट के आधार पर, टेलेन्ट के आधार पर देखेंगे तो पाएंगे बिहार के लोग सिर्फ रेलवे की जॉब में नहीं हैं, वे आई.ए.एस., आई.पी.एस., सी.आई.एफ.एस. में मेहनत करके गुजरात में और चारों तरफ पहुंचे हैं। बिहार और उत्तर प्रदेश के लोग सारे देश में फैले हुए हैं और रिज़र्व बैंक में सबसे ज्यादा पैसा वही जमा करवाते हैं। यह बात आपने उस समय भी उठाई थी और आपके भित्ते जी? ने शिव सेना के लोगों को कहा। देखिए, यह लड़ाई आपके घर की लड़ाई है, यह शिव सेना और आपके भतीजे की लड़ाई है, लेकिन इसमें लोग पिसे जा रहे हैं, किन्तु आप लोग हिम्मत नहीं दिखाते हैं।

महोदय, हमने महाराष्ट्र में ज्यादा से ज्यादा वेकेन्सी दीं। आप स्वयं वहां के उस समय के लोगों से पता करवाइएगा। वहां पर बच्चों को आप परीक्षा में बैठाइए, लेकिन रीजनल प्राथमिकता के आधार पर नियुक्ति नहीं होती है, उसके लिए आप लोगों को मैरिट में हरा दीजिए। चाहे रेलवे भर्ती बोर्ड हो अथवा कोई भी बोर्ड हो, वह पूरे देश का होता है, वह All India Service है। महाराष्ट्र की जनता को हम इसमें बिल्कुल दोषी नहीं मानते हैं। यह एक घर की लड़ाई है और बेवजह उसमें हमारा देश टूट रहा है। आपके मन में जो भ्रांति है कि रीजनल आधार पर प्रेफरेंस मिलेगा, उसके लिए तो आप संविधान को बदल दीजिए, सुप्रीम कोर्ट के ऑर्डर को बदल दीजिए और सभी पॉलिटिकल पार्टियों की बैठक बुलवा कर इसे तय कर दीजिए। यह बातें जो चली आ रही हैं, इसमें मैं आप जैसे लोगों को देखता हूं कि कहीं न कहीं आप लोग इस बात में खुद ही झुकते जा रहे हैं और इन बातों को हवा दे रहे हैं। यह नहीं होना चाहिए, इससे हमारा देश टूटेगा और उसका खामियाजा सभी को भुगतना पड़ेगा।

श्री मनोहर जोशी: सर, यहां पर बार-बार देश टूटने की बात कही जाती है। मैं इतना कहना चाहता हूं कि शिव सेना को राष्ट्र भक्ति सिखाने की जरूरत किसी को भी नहीं है। शिव सेना पूरे तरीके से राष्ट्र भक्ति जानती है और इसीलिए शिव सेना हर बार ...**(व्यवधान)**... पहले मुझे सुनिए, अगर नहीं सुनेंगे तो कभी नहीं समझेंगे और कभी शाणे भी नहीं बनेंगे। इसके लिए पहले सुनने की तैयारी तो चाहिए ...**(व्यवधान)**... । सर, पिछले समय में भी शिव सेना ने हर बार पहले 'जय हिन्द' कहा है और बाद में जय महाराष्ट्र कहा है। इसका मतलब यह है कि शिव सेना यह जानती है कि देश का दर्जा क्या है और उसमें शिव सेना की कितनी भूमिका है, इसके अतिरिक्त और कोई भूमिका नहीं है।

सर, रेलवे बोर्ड के बारे में जो कुछ हो रहा है, मैं श्री लालू प्रसाद जी को कहूंगा कि आप ध्यान नहीं देंगे तो यही होता रहेगा। लालू जी, आप ध्यान नहीं देते हैं, हम आपको मिले थे ...**(व्यवधान)**... सर, इन लोगों को सुनना पड़ेगा, नहीं सुनने से कैसे होगा?...(व्यवधान)...

श्री राजनीति प्रसाद: सर, यह जो कह रहे हैं...(व्यवधान)...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): You can reply to it later. ***...(Interruptions)...*** Please sit down.

श्री मनोहर जोशी: सर, बार-बार यह हुआ है, हमने लालू प्रसाद जी को पत्र लिखा है ...**(व्यवधान)**... हमने लालू प्रसाद जी को पत्र लिखा है, उसमें हमारा डेलिगेशन लैटर गया ...**(व्यवधान)**...

श्री राजनीति प्रसाद: सर, यह एलिगेशन लगाया जा रहा है ...**(व्यवधान)**...

श्री मनोहर जोशी: आपको क्या मालूम है, आप जानते क्या हैं?

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Please sit down. If he speaks anything against the rule***...(Interruptions)...*** What business have you got to do with it?

श्री मनोहर जोशी: सर, डेलिगेशन लेटर जाने के बाद लालू जी ने खुद कहा था कि इस विषय में मैं पूरा ध्यान दूंगा और यह सब जो घटना घटी, वह इसलिए घटी क्योंकि उस पर ध्यान नहीं दिया गया। यही हमारी कंप्लेंट है। सर, अगर वह ध्यान देते और जो बात कही थी, उसे सुनते ...**(व्यवधान)**... ।

सर, आप बैंक सर्विस में देखिए, देश में कितने बैंक हैं, इन्श्योरेंस कंपनी के बारे में देखिए, जब वहां के लोग यह बात सुनते हैं और जब वहां पर 50%-60% या 70% मराठी लोगों को नौकरी मिलती है, तब केवल रेलवे में ही क्यों नहीं मिलती है? यही हमारा सवाल है और इस विषय पर ...**(व्यवधान)**... इसी विषय पर आन्दोलन शुरू है।

सर, मैं यह बात कहूंगा कि रेलवे के बारे में जो कुछ हुआ है, वह पहली बार नहीं हुआ है, इससे पहले भी हुआ है। रेलवे मंत्री होने के कारण, माननीय लालू प्रसाद जी की यह जिम्मेदारी है...**(व्यवधान)**...

श्री राजनीति प्रसाद: यह आप एलिगेशन लगा रहे हैं, यह बात नहीं है। वह परीक्षा ऑल इंडिया लैवल पर होती है।

श्रीमती **वृंदा कारत**: जोशी जी, मैं आपसे यह पूछना चाहती हूं ...**(व्यवधान)**...

श्री रुद्रनारायण पाणि: सर, इनकी बात को ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Please take your seat. ***...(Interruptions)...*** आप बैठिए ...**(व्यवधान)**... Your own Party Leader is standing . ***...(Interruptions)...***

श्री मनोहर जोशी: सर, मैं यह बात भी कहूंगा ...**(व्यवधान)**... सर, मैं यह बात भी कहूंगा कि हर स्टेट के लोग जाते हैं ...**(व्यवधान)**... हर स्टेट के लोग दूसरे स्टेट्स में जाते हैं, नौकरियां करते हैं, लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि वहां के लोगों को नौकरी न मिले ...**(व्यवधान)**...

श्री रुद्रनारायण पाणि: सर, ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Please take your seat. ***...(Interruptions)...*** Mr. Pany, why are you speaking? Mr. Joshi, please don't repeat the points. ***...(Interruptions)...***

श्री मनोहर जोशी: वहां के लोगों को भी नौकरी मिलनी चाहिए। केवल दूसरे लोग ...**(व्यवधान)**...

श्रीमती वृंदा कारत: जोशी जी, मैं आपसे केवल एक बात पूछना चाहती हूं, अगर इनकी बात सही मानी भी जाती है...**(व्यवधान)**...

श्री मनोहर जोशी: जब हम देखते हैं कि रेलवे में अभी तक केवल 10% मराठी लोगों को नौकरी मिली, बाकी लोगों को नहीं मिली, तो लोगों को गुस्सा आना स्वाभाविक होता है और जब लोगों को गुस्सा आता है, तो गुस्सा दूर करने का कारण ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Mr. Joshi, please listen to me. I am on my legs. When you started the speech, I said, "We should keep this discussion at the higher level." You know the subject. If you bring in another subject, that is, the question of appointments in the Railway Board or any other board, then...

SHRI MANOHAR JOSHI: That is the reason. ***...(Interruptions)...***

श्री मनोहर जोशी: गड़बड़ी इसी के कारण हुई है ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Please. ***...(Interruptions)...*** Please. ***...(Interruptions)...***

श्री राजनीति प्रसाद: सर, ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Please. Let me speak. ***...(Interruptions)...*** I am on my legs.***...(Interruptions)...***

श्री लालू प्रसाद: सर, ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): I will give you time.

श्री लालू प्रसाद: मैं इनको हल्का कर देता हूँ ...**(व्यवधान)**... आप सुन तो लीजिए ...**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष (प्रो0 पी0जे0 कुरियन): मैं आपको मौका दूँगा। ...**(व्यवधान)**...

The point is that you may find so many reasons, but this discussion is on a particular subject wherein students from other States were attacked and so on. This is not my statement. This is what I heard from you. Therefore, you stick to that. If you go into discrimination, disintegration and so on, then, there will be a problem. Don't go into that. This discussion is not on that.

Now, if you think that there has been corruption or partiality in Railway Board appointments or selections, you have every right to give notice for such a discussion. You have every right to

give notice to the hon. Chairman and if the hon. Chairman deems it fit, he will allow it. But do not bring this issue of selection here. That is not relevant here.

श्री लालू प्रसाद: सर, ...(**व्यवधान**)... जोशी जी, एक मिनट।

महोदय, महाराष्ट्र में इस बार 241 centres पर परीक्षा हुई। उनमें से 8-10 centres पर पहले से, pre-planed कर के ये लोग - विद्यार्थी नहीं, महाराष्ट्र की जनता नहीं, उस संगठन और राज ठाकरे की पार्टी, जो जोशी जी के लिए खतरा है- आ गए। इसमें पूरी पारदर्शिता बरती जाती है। कम्प्यूटर से ही एक कॉपी बोर्ड में आ जाती है। ऑब्जेक्टिव क्वैशन है। उसमें रंगना है, बनाना है। गलत उत्तर या सही उत्तर उसी में रहते हैं। उसे मैंने नहीं बनाया है, वह बना हुआ है। मैं इनको इनवाइट करता हूँ कि यह देखें। परीक्षा के सेंटर पर जो लोग परीक्षा नहीं दे पाए, उन बच्चों के लिए तो हम अलग से व्यवस्था कराएँगे। बाकी जगहों पर जहाँ परीक्षा हुई है, उन सारी कॉपियों को और महाराष्ट्र के जो एग्जामिनीज़ हैं, जिन्होंने भी इसमें पार्टिसिपेट किया है, उसमें आप देख लीजिए कि वे कितना कम्प्लीट किये होंगे। इसमें बिल्कुल पारदर्शिता है। पहले भी गीते जी को मैंने कहा था कि यदि आपको apprehension है कि कहीं स्कैंडल हो रहा है तो आप आकर देख लीजिए। हम लोग आपको कॉपी दिखाने के लिए तैयार हैं। आप लोग पढ़ाई-लिखाई में महाराष्ट्र के बच्चों को मिस लीड कर रहे हैं। आप लोग नॉर्थ इंडियन कह के गुमराह कर रहे हैं। आप लोग अपने political yields के लिए इस तरह के narrow slogans लगा कर देश को तोड़वा रहे हैं। यह गलत बात है। ...(**व्यवधान**)...

THE VICE-CHAIRMAN(PROF. P. J. KURIEN): Please conclude.

श्री मनोहर जोशी: सर, मैं इनसे बिल्कुल सहमत नहीं हूँ ...(**व्यवधान**)... हमारे लोगों को दूसरी जगह पर आसानी से नौकरी मिलती है, केवल रेलवे बोर्ड में नहीं मिलती है, इसका यह गुस्सा है। ...(**व्यवधान**)... सर, मैं एक बार नहीं दस बार यही बात कहूँगा। ...(**व्यवधान**)... जहाँ तक उनको पढ़ाने का प्रश्न है, तो महाराष्ट्र के लोगों को क्या पढ़ाना है और क्या नहीं, इसे हम पूरे तरीके से जानते हैं। उसके लिए हमको किसी के उपदेश की जरूरत नहीं लगती है।

लेकिन, सर, एक बात मैं जरूर कहूँगा कि सेंट्रल गवर्नमेंट की जो परीक्षा होती है वह परीक्षा कैसी होनी चाहिए? यह सब प्रश्न उसके कारण निर्मित हुए हैं। रेलवे रिक्रूटमेंट बोर्ड ने इलाहाबाद, बंगलुरु, भोपाल, भुवनेश्वर, चेन्नै, गोरखपुर, जम्मू, श्रीनगर, पटना और सिकंदराबाद जगहों पर एग्जामिनेशंस लिए। सर, इसी विषय में- लालू प्रसाद जी यहाँ हैं इसलिए बताना चाहता हूँ- सेंट्रल गवर्नमेंट की दूसरी जो संस्थाएँ हैं, उन्होंने महाराष्ट्र में एग्जामिनेशन हो तो मराठी में भी उत्तर देने की परमिशन दी है। अगर गुजरात में परीक्षा हो तो वहाँ गुजराती भाषा में भी उत्तर दे सकते हैं। तो क्या आप यह कभी नहीं कर सकते हैं? यदि आपको महाराष्ट्र के प्रति प्रेम है तो इसकी जरूरत है। सर, दूसरी बात मैं यह कहूँगा कि ...(**व्यवधान**)...

श्री लालू प्रसाद: जोशी जी, ...(**व्यवधान**)... आपके समय से जो भाषा या language आपने, सब लोगों ने स्वीकार किया है, उसी को हम एडॉप्ट करते हैं। उसमें होम डिपार्टमेंट ने जो किया है, उसको हम एडॉप्ट करते हैं ...(**व्यवधान**)...

श्री मनोहर जोशी: सर, three language formula है। ये लोग three language formula को नहीं करना चाहते हैं। ...(**व्यवधान**)... मेरी complaint लालू प्रसाद जी के, वहां के लोगों के खिलाफ है। नियम के अनुसार जो करना चाहिए, वह नहीं करते हैं और कभी-कभी पॉलिसी बनाने में गलतियां होती हैं जिसका नतीजा ऐसा होता है। ...(**व्यवधान**)...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Joshiji, please wind up. ...*(Interruptions)*... Please conclude. ...*(Interruptions)*... Okay, take two more minutes.

जल संसाधन मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री जय प्रकाश नारायण यादव): महोदय, इंसान क्या जानवर है? ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Why do you waste the time of the House? You need not reply. ...*(Interruptions)*... The Minister is here to reply. ...*(Interruptions)*... Joshiji, conclude in two-three minutes.

श्री मनोहर जोशी: मंत्री जी आपकी तरफ से जवाब दे रहे हैं, आप क्यों बोलते हो? एक बात सादा है, अगर आप समझने की कोशिश करेंगे तो समझेंगे। आदमी जिस स्टेट से आता है, उस स्टेट में उसको नौकरी क्यों नहीं मिलती है? यह करना भी शासन की जिम्मेदारी है। आपके यहां के लोग हमारे यहां आते हैं। इसके कारण हमारे लोगों की नौकरी छीनकर ले जाएंगे तो वहां के लोगों को गुस्सा आना स्वाभाविक है। वह गुस्सा क्यों नहीं आएगा? वह हर स्टेट में आ जाएगा और यदि उसे आप टालना चाहते हैं, झगड़ा नहीं चाहते हैं तो आप यही करें कि आपकी स्टेट की तरक्की करिए। लालू प्रसाद जी, यहां भाषण करने से फायदा नहीं है। आपने जिस स्टेट में इतने साल राज किया, उस स्टेट की तरक्की नहीं होती इसलिए आपके स्टेट के लोग नौकरी के लिए बाहर जाते हैं। वहां तरक्की करना आपका काम है। वहां नौकरी नहीं कर सकते इसलिए दूसरी जगह आते हैं और वहां के लोगों के हाथ से नौकरी छीनने की कोशिश करते हैं और उनको गुस्सा आ गया तो इसमें गलत बात क्या है।

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Please conclude.

श्री मनोहर जोशी: सर, आखिरी बात कहना चाहता हूं। इस विषय में प्रधान मंत्री जी को भी ध्यान देना चाहिए कि लोगों की जो प्रादेशिक भावना है, उस भावना को दूर करने का प्रयास कोई भी न करे। हर स्टेट को अपने ऊपर अभिमान है। शरद यादव जी ने ठीक कहा कि महाराष्ट्र को किसी को सिखाने की जरूरत नहीं है। महाराष्ट्र पूरी तरह से जानता है कि क्या करना चाहिए, कैसे करना चाहिए। महोदय, ये आंदोलन भी इसीलिए होते हैं कि लोगों की भावनाओं को समझने की कोशिश नहीं की जाती है। महोदय, आज यह केवल रेलवे मंत्रालय में हो रहा है, दूसरे डिपार्टमेंट्स में यह नहीं होता है। हम लालू प्रसाद जी से मिले थे और उनसे बार-बार विनती की थी तब भी इस में सुधार नहीं हुआ है। मैं उनसे एक बार फिर से विनती करूंगा कि वे इस स्थिति में सुधार करेंगे। यह आपकी जिम्मेदारी है और यदि आप यह काम नहीं करेंगे तो महाराष्ट्र में जो आंदोलन हो रहा है उससे भी बड़ा आंदोलन हो सकता है। वह आंदोलन गवर्नमेंट के खिलाफ रहेगा। ...**(व्यवधान)**... आप सुनिए, वह आंदोलन आपके खिलाफ नहीं है, वहां के लोगों के खिलाफ नहीं है, बिहार के खिलाफ नहीं है। ...(व्यवधान)... यह वहां के लोगों के खिलाफ नहीं है, बिहार के लोगों के खिलाफ नहीं है, लेकिन गवर्नमेंट जो काम करती है, मंत्री जो काम करते हैं, उनके खिलाफ आंदोलन जारी रहेगा। इसीलिए यह विषय लालू प्रसाद जी का नहीं है, प्रधान मंत्री जी को इस विषय में तुरंत ध्यान देना पड़ेगा। महोदय, मैं एक बात कहूंगा।

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Now, please conclude. ...*(Interruptions)*... Now, take your seat. ...*(Interruptions)*...

श्री मनोहर जोशी: यह समझने की जरूरत है। इस समस्या का कारण क्या है, यह जानना बहुत जरूरी है। ये बातें रोकने की जरूरत है। महोदय, नौकरी का प्रश्न पेट का प्रश्न होता है। वहां बाहर के लोग आ जाएं

और नौकरी ले जाएं, यह नहीं चलेगा। इस बारे में शिव सेना की भूमिका मैंने यहां रखी है। आपकी इज़ाजत से मैं मेरा भाषण जो यहां नहीं कर सका हूं, वह पटल पर रखना चाहता हूं ताकि वह बाहर लोगों तक पहुंचे और गवर्नमेंट की जो गलतियां हैं, वे भी लोग समझ सकें। इसलिए मैं भाषण पटल पर रखूंगा और प्रधान मंत्री जी को कहूंगा कि वह इस विषय में पूरा ध्यान दें। शिव सेना यही चाहती है ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Why don't you sit down? ***...(Interruptions)...*** No, no; I will not allow you. ***...(Interruptions)...*** You take your seat. ***...(Interruptions)...***

श्री मनोहर जोशी: प्रधान मंत्री यदि ध्यान नहीं देंगे तो कोई रास्ता नहीं निकलेगा। यही मैं वार्निंग देता हूं और अपना भाषण समाप्त करता हूं।

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Now, please take your seat. ***...(Interruptions)...***

श्री लालू प्रसाद : यह सही नहीं है। ...**(व्यवधान)**...

श्री जय प्रकाश नारायण यादव: यह वोट की राजनीति आप छोड़िए ...**(व्यवधान)**....

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Why do you stand up like this? ***...(Interruptions)...*** Please sit down. ***...(Interruptions)...*** Please sit down. ***...(Interruptions)...*** Please listen to me. ***...(Interruptions)...*** What is this? ***...(Interruptions)...***

श्री लालू प्रसाद: Sir, he is threatening. ***...(Interruptions)...*** इस आवारागर्दी को आप आंदोलन बोलते हैं ? उन्होंने जो आवारागर्दी की उसको आंदोलन बोलते हैं ? ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Mr. Manohar Joshi, I think, you said***...(Interruptions)...*** Please sit down. I think you said you are placing the rest of the speech on the Table of the House. You cannot do it without the prior permission of the Chair. You have not taken the permission. So, it is not permitted. ***...(Interruptions)...*** It is not permitted.

SHRI MANOHAR JOSHI: Sir, I don't agree with it. ***...(Interruptions)...*** It has happened a number of times in the House. ***...(Interruptions)...***

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): You have to take the prior permission. ***...(Interruptions)...***

SHRI MANOHAR JOSHI: I can take your permission. ***...(Interruptions)...***

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): I am not permitting; I am not permitting. ***...(Interruptions)...***

श्री मनोहर जोशी: लेकिन शिव सेना की आवाज आप दबा नहीं सकते इस तरीके से।..(व्यवधान)

श्रीमती वृंदा कारत: सर, यह क्या है? ...**(व्यवधान)**...

श्री मनोहर जोशी: शिव सेना की आवाज दबाने की कोशिश कोई न करे। उसे दबाने की हिम्मत किसी में देश में नहीं है। ...**(व्यवधान)**... नहीं दबा सकते।

श्रीमती वृंदा कारत: सर, आप निकालिए इनके भाषण का हिस्सा, जिसमें भड़का रहे हैं लोगों को। इसको आप हटाइए। ..**(व्यवधान)**

उपसभाध्यक्ष (प्रो0 पी. जे. कुरियन): श्री दिग्विजय सिंह।

श्री दिग्विजय सिंह: उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं जोशी जी की बातों को बहुत गंभीरता से और जिम्मेवारी से सुन रहा था। इस सदन में हर सदस्य को अपनी बात बोलने का हक है, लेकिन मैं अपनी बात जोशी जी की बात से ही प्रारंभ करुंगा। यह मेरा सौभाग्य है कि मैं बिहार का भी हूँ और उस संसदीय क्षेत्र से भी रहा हूँ, जो बांका मधु लिमये का, जिसका नाम लेकर बार-बार जिक्र किया जा रहा था, वहां से मैं दो बार सांसद भी रहा हूँ। मैं इस बात का जिक्र इसलिए कर रहा हूँ कि जब महात्मा गांधी यहां आए थे, तो उस वक्त महाराष्ट्र और गुजरात अलग नहीं था, एक प्रदेश था और उसका नाम था बंबई। गांधी जी जब दक्षिण अफ्रीका से लौट कर आए, तो अपने गुरू गोखले के पास गए और गोखले के पास जाने के बाद गांधी ने कहा कि मैं अंग्रेजों के खिलाफ जंग-ए-आजादी लड़ना चाहता हूँ। गोखले ने कहा कि गांधी, अंग्रेजों के खिलाफ लड़ना इतना आसान नहीं है। उसके साम्राज्य का सूरज कभी डूबता नहीं। दुनिया की सारी ताकत और दौलत उसके हाथ में है। तुम अंग्रेजों के खिलाफ नहीं लड़ सकते हो। गांधी ने गोखले से कहा कि हम आपको गुरू मानते हैं, हम आपका आशीर्वाद लेने आए हैं, आप मुझे आशीर्वाद दीजिए कि मैं अंग्रेजों को इस देश से भगा सकूं। गोखले ने कहा कि तुम मेरा आशीर्वाद लेना ही चाहते हो, तो जाओ, देश भर घूम कर आना, साल भर घूमना और देश के किसी भी हिस्से में एक रात से ज्यादा मत रुकना। उसके बाद जब लौट कर आना, तो मुझे बताना कि क्या तुम सचमुच अंग्रेजों से लड़ सकते हो? अपने गुरू से किए वायदे के मुताबिक गांधी कहीं एक रात से ज्यादा नहीं रुके और साल भर घूमने के बाद जब लौट कर गए, तो गोखले ने हंसकर गांधी से पूछा कि अभी भी लड़ना चाहते हो? गांधी ने गोखले को कहा कि मेरा मन अभी भी अटल है। गोखले ने पूछा - बताओ, इस देश में तुम कहां से लड़ना चाहते हो? गांधी ने कहा कि पूरा देश घूमने के बाद मुळो एक जगह की मिट्टी में इतनी ताकत और शक्ति दिख रही है, जहां से मैं जंग-ए-आजादी की लड़ाई लड़ूंगा और वह हिस्सा देश में कहीं और नहीं, देश में बिहार का चंपारण है, वहीं से सत्याग्रह करुंगा। एक आदमी बंबई से आकर बिहार की मिट्टी की सौगंध खाकर अंग्रेजी हुकूमत को भगाने की हिम्मत कर सका, आज वहीं के लोग इस तरह की भाषा का इस्तेमाल कर रहे हैं, जिससे देश कमजोर हो, तो मुझे दुख होता है। मधु लिमये पूना में चितपावन ब्रह्मण, बिहार में बांका और मुंगेर, जहां का जिक्र किया राजनीति प्रसाद जी ने, सबसे पिछड़ा हुआ इलाका, हम लोग हाफ पेंट पहनते थे उस समय और उस समय हम स्कूल के विद्यार्थी थे, तब हमने मधु लिमये को वहां से नेता बनाकर वहां से समाजवादी आंदोलन की नींव रखी और आज वहां के लोग इस भाषा का इस्तेमाल कर रहे हैं। इससे देश पर क्या असर होता होगा? इसका किसी को अंदाजा है।

उपसभाध्यक्ष महोदय, जहां तक रेलवे रिक्रूटमेंट बोर्ड की बात है, मैं कुछ समय के लिए मंत्री था, इस काम की शुरूआत हमारे दल के जो नेता है नीतीश कुमार जी, उन्होंने प्रारंभ की थी और मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि जो फार्मूला नीतीश कुमार जी ने रेलवे रिक्रूटमेंट बोर्ड का बनाया था, दुनिया का कोई बड़े से बड़ा बेईमान आ जाए, उसमें बेईमानी नहीं कर सकता है। यह मेरा विश्वास है, क्योंकि उसकी तीन कॉपी हैं, तीन जगह कम्प्युटर से कॉपी जांची जाती है। मन का भड़ास किसी और कारण से निकालना हो और बहाना रेल का रखा जाए, तो मैं इससे सहमत नहीं हूँ। मेरा लालू जी से राजनैतिक मतभेद है, लेकिन इस चीज को मैं जानता हूँ, इसलिए उनकी मैं आलोचना नहीं कर सकता। रेलवे रिक्रूटमेंट बोर्ड में कोई बेईमानी करना चाहे, तो बेईमानी नहीं कर सकता और इसका श्रेय नीतीश कुमार को है। जोशी जी, मैं इसलिए इस बात को कह रहा हूँ, आप इस देश के स्पीकर रहे हो, वह आपका कोई मामूली पद नहीं था। यह संसद, इसको आप सबसे बड़ा मंदिर कह लें और इस मंदिर के आप सबसे बड़े पुजारी रहे हैं। अगर आप कुछ बात बोलोगे, तो देश में उसका गलत संदेश जाएगा।

2.00 p.m.

महोदय, यह जो खेल हो रहा है, गिरफ्तारी करो, गिरफ्तारी करो, यह खेल पिछली बार भी हो चुका है। वृंदा जी, आपने सही बात कही, जो आदमी कोर्ट में एफिडेविट देकर आया है कि मैं कोई ऐसी भाषा नहीं बोलूंगा, जिससे देश की एकता और अखंडता पर खतरा पड़े, वही आदमी 6 महीनों से वैसी ही भाषा बोल रहा है। गृह मंत्री जी, शिवराज पाटिल जी, आप देश के गृह मंत्री हो, शरद यादव जी ने आपको कहा कि आप कल यहां रहोगे, नहीं रहोगे, लेकिन यह पद गृह मंत्री का तो रहेगा और याद रखिएगा कि राज की कल्पना इंसान ने इसलिए नहीं की थी कि आपको गोली और बंदूक खाली दे दे। इंसान तो अकेला रहता था। जब अकेला नहीं रह सका, तो समाज बनाया और समाज के भरोसे भी नहीं रह सका, तो राज बनाया और राज को यह ताकत दी कि अगर हमसे गलती हो, तो हम पर गोली चलाओ, हमको फांसी की सजा सुनाओ। और उसके बदले में उम्मीद की थी राज्य से, सरकार से कि हमें आप कम से कम हमारे जीवन की सुरक्षा दें। आज बिहार का, उत्तर भारत का विद्यार्थी अगर महाराष्ट्र जाता है इम्तिहान देने तो क्या कोई गुनाह करता है? जोशी जी, यह संविधान हमने नहीं बनाया था, यह संविधान बाबा साहेब अम्बेडकर ने बनाया था, महाराष्ट्र के लोगों ने बनाया था, महात्मा गांधी की प्रेरणा से यह संविधान बना था और उस संविधान की धज्जियां उड़ाई जाएं और हम उसका तमाशा देखें, गृह मंत्री मूक दर्शक के रूप में देखता रहे! राज्य सरकार और केन्द्र सरकार की कोई जिम्मेदारी नहीं है? कानून ऐसा बनाया जाता है कि घंटे भर के अंदर बेल ले ली जाए, तुरंत जमानत मिल जाए, यह कानून बनाया जाता है, यह धारा दी जाती है! गृह मंत्री जी, यह आपकी जिम्मेदारी है, मैं किसी और से उम्मीद नहीं कर सकता हूं, यह ताकत आपके हाथ में है, आप 355 का इस्तेमाल करते हो या 356 का इस्तेमाल होता है इस देश में। इनका इस्तेमाल कब होगा? ये धाराएं इसीलिए संविधान में डाली गई थीं। कब इनको निकाला जाएगा और इनके बारे में कहा जाएगा कि यह राज्य की ताकत है, इनका इस्तेमाल हम करेंगे।

उपसभाध्यक्ष महोदय, धीरे-धीरे देश में इन खतरों का अहसास बढ़ता चला जा रहा है सरकार की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं, राज्य सरकार और केन्द्र सरकार दोनों मूक दर्शक हैं, हर आदमी असहाय है। प्रधानमंत्री असहाय, गृह मंत्री असहाय, सब असहाय, यह संसद असहाय, फिर हम हैं क्यों? यह सदन क्यों है? हर आदमी असहाय! गृह मंत्री कहता है कि मैं देखता हूं, मैं समझता हूं! सब कुछ तो देख रहे हैं आप, क्या नहीं देख रहे? टेलीविजन पर एक-एक मिनट की रिपोर्ट आ रही है। रात को 2:00 बजे गिरफ्तारी होती है, जूलूस में लेकर मुम्बई लाया जाता है, ताकि पूरे महाराष्ट्र में यह आग लगे। राज्य सरकार का हेलिकॉप्टर किस दिन के लिए था? सीधा उठाकर ले आए होते मुम्बई उसको और पकड़कर बंद कर देते जेल में। दफा क्या लगनी चाहिए थी और क्या दफा लग रही है। आओ, आओ गिरफ्तारी खेलें, यह खेल हो रहा है। केन्द्र सरकार मूक दर्शक बनी हुई है। भारत के संविधान की रक्षा की जिस कसम को लेकर गृह मंत्री जी आपने जिस गृह मंत्री की शपथ ली थी, आप उसकी धज्जियां उड़ा रहे हैं और ऐसी सरकार और ऐसे गृह मंत्री को इस सदन में एक सैकिंड भी रहने का कोई हक नहीं है, जो अपनी जिम्मेवारी का अहसास नहीं करे, जो लोगों की भावनाओं की कद्र नहीं कर सके। देश के संविधान की धज्जियां उड़ाने वाला आदमी हर तरफ टेलीविजन पर दिखाया जा रहा हो ...**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष (प्रो0 पी0जे0 कुरियन): आप कन्कलूड करें प्लीज़।

श्री दिग्विजय सिंह: मैं कन्कलूड कर रहा हूं, उपसभाध्यक्ष जी, मैं ज्यादा बोलने के लिए तैयार नहीं हूं, मैं सिर्फ इतना कहना चाहता हूं कि अगर गृह मंत्री जी सचमुच हम सब लोगों की भावनाओं को समझ रहे हैं तो

आज एक ही फैसला करें कि कम से कम कानून का खौफ्, भारत के संविधान का डर और देश की एकता का गरूर ऐसे लोगों के मन में रहे। मैं इतना ही कहकर अपनी बात समाप्त करता हूं।

श्री वीरेन्द्र भाटिया (उत्तर प्रदेश): उपसभाध्यक्ष जी, मैं अभी श्रद्धेय श्री जोशी जी का भाषण सुन रहा था। जोशी जी महाराष्ट्र के नेता नहीं, भारत की संसद के भूतपूर्व स्पीकर भी रहे हैं।

श्री शरद यादव: उस समय ये बहुत बढ़िया थे।

श्री वीरेन्द्र भाटिया: महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री भी रहे हैं। कितने व्यक्ति थे शिव सेना के जब आपको भारत की संसद ने सभापति के आसन पर आसीन किया था? मैं समळाता हूं कि उन्होंने विषयांतर करने की कोशिश की। अच्छा लगता कि उनके मुंह से उन तत्वों की निंदा की जाती जो भारत को विभाजन की ओर ले जाने का कुत्सित प्रयास कर रहे हैं। मैं नहीं समझता कि उनकी सहयोगी पार्टी भा0ज0पा0 भी उनके इस बयान के साथ होगी, मुझे यह विश्वास है।

[श्री उपसभापति पीठासीन हुए]

जोशी जी को मालूम होना चाहिए कि अराजकता भी एक शब्द है। उन्होंने रेलवे बोर्ड की बात कहकर यह कहा कि परिस्थितियां ऐसी उत्पन्न हो गईं, लेकिन इस देश में अराजकता और विभाजनकारी शक्तियों को किसी भी प्रकार से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष समर्थन देना, मैं समझता हूं कि एक प्रकार से देश के साथ खिलवाड़ करना है। उपसभापति जी, यह देश संघीय प्रणाली का देश है। यह देश अटक से कटक और काश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक के लोगों का देश है। महाराष्ट्र, पंजाब, बंगाल, आसाम इसके भाग हो सकते हैं, लेकिन हम सब महाराष्ट्रीय, असमिया, उत्तर प्रदेशीय और बिहारी बाद में हैं, पहले हम केवल भारतीय हैं, यह हमें हमेशा याद रखना चाहिए। यह मुल्क बड़ा है, अभी कुछ दिन पहले 'चक दे इंडिया' पिक्चर आई थी, मैंने भी देखी, उसने मुझे बड़ा प्रभावित किया। उसमें पहले लोगों ने कहा कि हम महाराष्ट्रीय हैं, किसी ने कहा कि हम आसाम से आ रहे हैं, किसी खिलाड़ी ने कहा कि हम पंजाब से आ रहे हैं, सब अलग-अलग रहे, पराजित होते रहे, लेकिन जब उनमें spirit भरी गई कि हम भारतीय हैं, तो सब एकता के सूत्र में आबद्ध होकर विजय की ओर गए।

उपसभापति जी, मैं याद दिलाना चाहता हूं कि अभी सभी व्यक्तियों का नाम लिया गया। हमारे भारत के गृह मंत्री भी महाराष्ट्र से आते हैं, जिस समय इस देश में सन् 1971 की लड़ाई लड़ी गई, उस समय महाराष्ट्र के ही श्री यशवंत राव चव्हाण को भारत का डिफेंस मिनिस्टर बनाया गया था और हर व्यक्ति ने उनको आंखों पर बिठाया था क्योंकि उन्होंने विजय के नायक की भूमिका अदा की थी।

आज महाराष्ट्र में उत्तर भारतीयों पर आक्रमण हो रहा है, लगातार इस प्रकार की घटनाएं हो रही हैं और लड़ने वाला कोई नहीं है। भारत के एक मंत्री जब उनके खिलाफ कुछ कहते हैं, तो उनको चुनौती दी जाती है, मुलायम सिंह जी और अमर सिंह जी जब उनके खिलाफ आवाज़ उठाते हैं, तो उनको धमकियां दी जाती हैं, यहां की सांसद श्रीमती जया बच्चन के घर पर आक्रमण होता है, अमिताभ बच्चन के घर पर आक्रमण होता है। हमारे सांसद अबू आसिम आज़मी जब लड़ने का प्रयास करते हैं, तो सरकार उनके विरुद्ध कार्यवाही करती है और दोषी के विरुद्ध नहीं, अपराधी के विरुद्ध नहीं, बल्कि सांसद के विरुद्ध कार्यवाही होती है, यह दोहरी नीति महाराष्ट्र सरकार की है।

उपसभापति जी, मैं आज एक बात कहना चाहता हूं कि वोटों की राजनीति से ऊपर उठकर इनको कम से कम देश के बारे में सोचना चाहिए। देश के लोग इन्हें माफ नहीं करेंगे और वह दल कभी नहीं रहेगा, न वह

सत्ता रहेगी, जो दल इस देश में विभाजनकारी शक्तियों को प्रश्रय देगा, चाहे वह कोई भी दल हो। मैं कहना चाहता हूं कि क्या यह देशद्रोह नहीं है, क्या यह राज्य के खिलाफ बगावत का बिगुल नहीं है, क्या यह देश को बांटने की प्रक्रिया नहीं है? जो लोग इस प्रकार का कार्य कर रहे हैं, वे चुनौती देते हैं कि अगर हिम्मत है, तो हमें गिरफ्तार कीजिए। क्या यह सरकार की failure नहीं हैं, क्या यह इस बात का प्रतीक नहीं है कि विघटनकारी शक्तियों को भारत का गृह मंत्री रोक नहीं पा रहा है?

माननीय गृह मंत्री जी, आप तो उसी प्रदेश के हैं, मैं ज्यादा नहीं बोलना चाहता हूं, लेकिन मैं आपसे एक बात कहूंगा कि इसकी समवेत स्वर में निंदा की जानी चाहिए। अभी यशवंत सिन्हा जी ने कहा कि आप 355 का प्रयोग कब करेंगे? आर्टिकल 355 में एक शब्द है- Internal disturbance. क्या इससे भी बड़ी कोई internal disturbance की स्थिति उत्पन्न हो सकती है? आप आंखें बंद किए हुए हैं क्योंकि यह महाराष्ट्र का विषय है। भारत के गृह मंत्री इसलिए चुप हैं कि वे महाराष्ट्र के रहने वाले हैं और कहीं महाराष्ट्र में उनके खिलाफ बगावत न हो जाए। अगर हर राजनीतिज्ञ इसी प्रकार से सोचेगा, तो यह देश कहां जाएगा? मैं एक बात भारत के गृह मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि आपका ध्यान इस ओर आकृष्ट नहीं हुआ है...(व्यवधान)...

श्री शरद यादव: एक मिनट, मैं कुछ कहना चाहता हूं।

श्री वीरेन्द्र भाटिया: पहले मुझे अपनी बात कह लेने दीजिए ... पहले आप मेरे सजेशंस सुन लीजिए, उसके बाद बोल लीजिएगा। मैं एक नयी बात कहने जा रहा था, मेरा एक सुझाव है, मैं ज्यादा भाषण नहीं देना चाहता हूं, मैं केवल यह कहना चाहता हूं कि यह वक्त है आर्टिकल 355 के प्रयोग का। दूसरा, आपका ध्यान मैं इस ओर आकृष्ट करना चाहता हूं कि हमारे पास एक नेशनल सिक्योरिटी ऐक्ट है, आपने कहा कि 253A और जितनी धाराएं हैं, उन सबमें जमानत हो जाती है, लेकिन नेशनल सिक्योरिटी ऐक्ट में disturbance of public order and internal security of the State जहां पर प्रभावित होती है, उसके लिए यह प्रयोग करने का अधिकार दिया गया है - न केवल राज्य सरकार को, वरन केन्द्र सरकार को भी। आखिर यह किसलिए बना हुआ है? छुटभैये जो crime करते हैं, वहां यह 307 और 302 में प्रयोग हो जाता है, जहां व्यक्तिगत वैमनस्यता होती है, वहां प्रयोग हो जाता है, लेकिन इससे बड़ा security of the State and disturbance of public order का कोई विषय हो सकता है क्या? अगर है, अगर राज्य सरकार उस पर कार्यवाही नहीं कर रही है, तो गृह मंत्री जी को जरूर मालूम होगा कि सेक्शन 3 में सेन्ट्रल गवर्नमेंट को भी नेशनल सेक्यूरिटी एक्ट में डिटेंशन के आदेश पारित करने का पावर है। चूंकि मैं नेशनल सेक्यूरिटी एक्ट का विरोधी हूँ, लेकिन उसके बाद भी वर्तमान में जो परिस्थितियां हैं और यह विषम परिस्थिति है। मेरी आपसे मांग है कि ऐसे व्यक्ति को नेशनल सेक्यूरिटी एक्ट के अंतर्गत निरुद्ध किया जाना चाहिए, जिसमें कम से कम एक वर्ष तक जमानत नहीं मिलता **(समय की घंटी)** । मेरा अंतिम सुझाव यह है कि जो राजनीतिक दल इस प्रकार की कार्रवाई में लिप्त होते हैं, उन राजनीतिक दलों की मान्यता समाप्त की जानी चाहिए और जो व्यक्ति इस तरह से विभाजनकारी और देशद्रोही कार्य करते हैं, उनके लिए कानून बनना चाहिए। चूंकि चुनाव के कारण, चुनाव के लिए वे इस प्रकार की कार्रवाई में लिप्त होते हैं, उनको चुनाव लड़ने से वंचित किया जाना चाहिए। यह मेरा सुझाव है, जय हिन्द, जय भारत।

श्री विजय कुमार रूपाणी: महोदय, श्री राज ठाकरे के arrest होने के बाद मुंबई की स्थिति क्या है?

श्री उपसभापति: वे जब बोलेंगे तो इस पर भी बोलेंगे ...**(व्यवधान)**... l

SHRI SYED AZEEZ PASHA (Andhra Pradesh): Sir, the recent happenings in the suburbs of Mumbai resulted in a serious set back to the federal structure and democratic set up of the country. Yesterday, I saw on Television the Hindi-speaking people, who went to Mumbai to appear for examination, attacked by the MNS members and they were running helter-skelter. As an Indian, I felt ashamed over what happened in Mumbai. Sir, Mumbai is the commercial hub of our country and financial capital of India. Till now, we have immunity only to diplomatic persons who belong to other countries from arrest, etc. But, we have never seen and we have never come across that some other persons are also having immunity in our own country if they commit certain offences.

First of all, we feel whether there is any Government existing in Maharashtra. He is directly challenging the administration. He says, "You arrest me, and you will see that entire Maharashtra will burn." He is terming the Chief Minister spineless and impotent. I don't know what sort of words he used. Still, the Government of Maharashtra is saying, "We are thinking on the lines of taking some action." Still, the Government has not made up its mind, even though we were told that Mumbai Police is one of the efficient police forces. But, at the same time, they are not in a position to arrest the main person who is responsible for creating all sorts of things, not only yesterday but for the past one or two years! He is directly challenging persons from other States. So, I think, it is necessary that we invoke Article 355 for taking suitable action against the present Government. Sir, we know that the party ruling the State and the Centre is the same. I think, suitable action should be taken. But, we are seeing that the Central Government is behaving as a mute spectator. It is not taking any sort of action. So, it is very much necessary that immediate action should be taken in the interest of the nation. Otherwise, such fissiparous elements will denigrate the image of the country. Thank you.

श्री शिवराज वी. पाटिल: श्रीमन्, जिस विषय पर आज यहां पर चर्चा हुई है, वह विषय बहुत ही महत्वपूर्ण है और जिन सदस्यों ने अपने विचार प्रकट किए हैं, मैं समझता हूँ कि उन्होंने देश के सामने उपस्थित होने वाले एक महत्वपूर्ण विषय की ओर इस सदन का ध्यान आकर्षित किया है और अपने देश के लोगों का भी ध्यान आकर्षित किया है। कोई एक सदस्य कह रहे थे कि अगर हम ऐसी बात कर रहे हैं, तो हम पर गुस्सा मत होइए। यह गुस्सा करने की बात तो है ही नहीं, मगर जिन्होंने अपने विचार यहां पर प्रकट किए हैं, उन्होंने अपना कर्तव्य निभाया है, ऐसा मानने की बात है, यह मैं मानकर चलता हूं।

एक दूसरी बात यहां पर स्पष्ट हुई है और उधर बैठे हुए एक सम्माननीय सदस्य ने कही है और वह बात बहुत ही महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा है कि अगर देश को एक रखना है, तो हम सब लोगों को मिलकर काम करना चाहिए और यह बहुत ही महत्वपूर्ण बात है। एक-दूसरे को दोष देकर और मन में गलत विचार रखकर, दोष देकर यह प्रश्न हल नहीं हो सकेगा, मगर जो गलतियां हैं, उनको समझाकर, उनको दूर करके और एक-दूसरे के साथ हाथ मिलाकर अगर काम करें, तो ऐसे जो प्रश्न हमारे देश के सामने उपस्थित हो रहे हैं, उनको हम जरूर हल कर सकते हैं। इसके लिए भी उन महानुभाव सदस्यों का हमें आभार व्यक्त करना चाहिए।

एक तीसरी बात यहां पर प्रकट हुई है और हमारे साथी, जिनके बारे में हम एक आदर की भावना रखते हैं, उन्होंने यहां पर कही। वह तीसरी बात है कि जहां के लोग हैं, वहां के लोगों को ही नौकरी मिलनी चाहिए। अगर ऐसा विचार मन में लेकर हम अपने देश को चलाने की कोशिश करेंगे, तो कहां तक उसमें हम सफल होंगे, यह बताया नहीं जा सकता। यह एक ऐसी बात है जिसकी वजह से अनेक प्रश्न निर्माण होंगे, कोई प्रश्न हल नहीं होगा। यह बात महाराष्ट्र में हुई, तो वही बात है, बिहार में हुई, तो वही बात है, असम में हुई ऐसी बात, तो वही बात है और दूसरी किसी जगह पर भी इस प्रकार का विचार लेकर अगर कोई सामने आया है, तो हमारा इतना बड़ा देश, जहां पर अनेक भाषाएं बोली जाती हैं, अनेक विचारों के लोग रहते हैं, और हमारे संविधान में यह बताया गया है कि कोई भी आदमी कहीं भी रह सकता है, कहीं भी जा सकता है, कहीं भी काम कर सकता है और उसे रोकने का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता। इस प्रकार की बात अगर हमारे संविधान में है और उसके बाद भी अगर हम इस प्रकार के विचार को प्रकट करेंगे, तो हमारे देश की एकता पर आंच आने वाली है, ऐसा हमें लगता है और ऐसे विचार को सामने लेकर हम अपने देश को एक नहीं रख सकते हैं। महाराष्ट्र का आदमी बिहार में जाकर जरूर काम कर सकता है, महाराष्ट्र का आदमी उत्तर प्रदेश में आकर जो करना चाहता है, उसको करने की इजाज़त होनी चाहिए। उसी प्रकार से दूसरे प्रांतों के व्यक्तियों को भी, शहरियों को भी महाराष्ट्र में जाकर काम करने की इजाज़त होनी चाहिए। महाराष्ट्र जो बना है, वह सहयाद्री से बना है, गोदावरी और कृष्णा से बना है। महाराष्ट्र बना है, वहां पर मज़दूर के नाते, एक काश्तकार के नाते काम करने वाले जो लोग हैं, उनसे बना है। महाराष्ट्र बना है, वह मुम्बई की वजह से भी बना है और मुम्बई बनी है, सारे हिंदुस्तान के लोगों की वजह से - इस बात को हम भूल नहीं सकते। अगर इस बात को हम भूलेंगे, तो बहुत गलती करेंगे। मुम्बई को बनाने में हर प्रांत के आदमी का हाथ है। उन्होंने अपना खून-पसीना वहां पर बहाया है और उसके बाद मुम्बई बनी है। मुम्बई बनी है, तो रेलवे की वजह से बनी है। मुम्बई बनी है, तो हवाई जहाज़ की वजह से बनी है। मुम्बई बनी है, वहां के shipping arrangements, जो Sea Ports हैं, उनकी वजह से बनी है। मुम्बई बनी है, वहां के जो ऑयल के कारखाने है, उनकी वजह से बनी है, ऑटोमोबाइल इंडस्ट्री से बनी है, फॉरेन ट्रेड की वजह से मुम्बई बनी है, वहां पर फाइनेंशियल इंस्टीट्यूशन्स हैं, उनकी वजह से मुम्बई बनी है और देश के अलग-अलग कोनों से लोगों ने आकर, वहां बसकर, मुम्बई को बनाया है। बाहर के लोगों ने भी आकर वहां कुछ किया होगा, लेकिन प्रदेश के लोग भी वहां आकर कारखाने लगाते हैं। इन सबसे बनी हुई मुम्बई है। यह मुम्बई हमारे देश की शान है, महाराष्ट्र की शान है, हमारे देश की शान है। वहां जाने के लिए, जैसे हम मक्का मदीना जाते हैं, जैसे हम काशी जाते हैं, वैसे ही मुम्बई जाने के लिए लोगों के मन में आदर की भावना का निर्माण होना चाहिए। अगर हम उस भावना को तोड़ेंगे तो यह बात ठीक नहीं होगी, ऐसा मुझे लगता है। हमारी नम्रता से यही विनती है, इस सदन से यही विनती है। कुछ लोग बाहर आकर कह दें कि मुझे पकड़ो, हम आपको बताएंगे। हम तो यह करते ही रहेंगे। यहां से भी अगर हम बोलेंगे, इस सदन से भी बोलेंगे कि ऐसा होता रहेगा तो वहां पर आंदोलन होगा। इसका मतलब क्या है? इससे क्या निकलकर आएगा? इसका क्या परिणाम होगा और आप किसको दोष देंगे? इस विचार को अगर हम गलत नहीं कहेंगे, बोलने वालों को अगर हम गलत नहीं कहेंगे और एक मिनिस्टर को पकड़कर उसको यहां पर अपने शब्दों के जरिए मारने की कोशिश करेंगे तो उससे यह प्रश्न हल होने वाला नहीं है। यह प्रश्न इस तरह से हल नहीं होने वाला है। मुझे एक बात का और दुख है कि बात करते-करते किसी ने कहा कि मधु लमये जी चितपावन ब्राह्मण थे। यह किस बात का द्योतक है? यह छोटे मन का द्योतक है, छोटे विचार का द्योतक है। समाज के अंदर समाज को बांटने का द्योतक है।...**(व्यवधान)**...

श्री दिग्विजय सिंह: मैंने यह इसलिए कहा था कि जिसके बारे में कहा जाता है कि इतनी कास्ट रिडन सोसायाटी है, उस सोसायटी में भी महाराष्ट्र के आदमी की इज़्ज़त थी। मैंने इसलिए कहा था। मैंने इसलिए नहीं कहा था...(व्यवधान)...

श्री शिवराज वी. पाटिल: यही बात है। यहां पर अगर किसी चीज़ का विरोध होना चाहिए तो छोटे विचार का विरोध होना जरूरी है। चाहे वह धर्म के नाम पर हो, जाति के नाम पर हो, प्रांत के नाम पर हो, भाषा के नाम पर हो या राजकार्य के लिए हो - जो छोटा मन लेकर काम कर रहा है, उसका विरोध होना चाहिए।

श्री दिग्विजय सिंह: बिल्कुल सही है।

श्री शिवराज वी. पाटिल: लेकिन अंदर से बाहर क्या निकलकर आता है? छोटापन निकलकर आ जाता है। इसी वजह से ऐसे प्रश्नों का निर्माण होता है। इसी का विरोध हमें यहां पर करना जरूरी है। महोदय, मैं इस बात को यहां पर छोड़ देता हूं।

श्री दिग्विजय सिंह: नहीं, आप कहिए।...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: मंत्री जी बोल रहे हैं। तिवारी जी, आप बैठिए। ...**(व्यवधान)**...

श्री शिवराज वी. पाटिल: मैंने जो कहना था, कह दिया है और आपने सुन लिया है। ...**(व्यवधान)**... मैं एक ही बात कह रहा था कि इस बड़े देश को, इस महान देश को अगर हम एक रखना चाहते हैं तो अपना मन भी इस देश के जितना बड़ा करना पड़ेगा। इस देश में अपने विचार ऐसे रखने पड़ेंगे जिसके अंदर सब लोगों के लिए जगह हो, सब धर्म के लोगों की जगह हो, सब प्रांत के लोगों की जगह हो, सब भाषा के लोगों की जगह हो, सब प्रकार के विचार के लोगों के लिए जगह हो। ऐसा करना पड़ेगा।...**(व्यवधान)**...

श्री शरद यादव: मंत्री जी, एक मिनट मेरी बात सुन लीजिए। ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति: मंत्री जी यील्ड नहीं कर रहे हैं।

श्री शरद यादव: सर, मैं आपके माध्यम से गृह मंत्री जी से इतनी विनती करना चाहता हूं कि आपने जो बातें कहीं..

श्री शिवराज वी. पाटिल: मुझे पूरा करने दीजिए। मैंने अपनी बात पूरी नहीं की है।

श्री शरद यादव: आपने जो बातें कहीं हैं, हम उनसे पूरी तरह से सहमत हैं। अब इस तरह के छोटे काम करने वालों के लिए आप सख्ती से क्या काम करेंगे, यह सुनने के लिए हम बेचैन हैं।

श्री शिवराज वी. पाटिल: मैं वही बताने जा रहा हूं, आप सुनिए तो सही। मेरी बात पूर्ण करने के बाद अगर आप यह सवाल करते तो दूसरी बात थी। आपने शुरूआत की है और मैंने बताया कि क्या करना चाहिए। मैं आप पर आक्षेप नहीं लगा रहा हूं, मैं तो आपकी तारीफ कर रहा हूं कि आपने इस महत्वपूर्ण प्रश्न को उठाया, जिम्मेदारी से उठाया। हम आपकी तारीफ कर रहे हैं। हमारा विचार इससे अलग नहीं है। हम भी उसी विचार के हैं, यह कहकर मैं अपनी बात शुरू कर रहा हूं। इसके बाद जो कहना है, वह मैं कहूंगा। मैं कहना चाहता था कि यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है और आज इस वक्त इस बात की ही जरूरत है कि कहीं पर धर्म के नाम पर झगड़ा हो रहा है, कहीं पर प्रांत के नाम पर झगड़ा हो रहा है, कहीं पर भाषा के नाम पर झगड़ा हो रहा है, कहीं पर राजकीय विचार के नाम पर झगड़ा हो रहा है, अगर हम वहां ऐसा झगड़ा करें और हम कहें कि अमुक-अमुक

आदमियों को ही सिर्फ इसके ऊपर कंट्रोल करना चाहिए और हम बोलते जाएंगे, हम भड़काते जाएंगे, हम उकसाते जाएंगे और कहेंगे कि आप सब लोग इसको करिए - ऐसा नहीं हो सकेगा। हम सबको मिलकर उसमें काम करना पड़ेगा। इसीलिए जो महानुभाव यहां पर यह बोल रहे थे कि हमें मिलकर काम करना चाहिए, वह मैं समझता हूं कि बहुत ही महत्वपूर्ण बात है। हम सब लोग जब तक मिलकर काम नहीं करेंगे, तब तक यह बात नहीं होने वाली। सवाल पैदा हो जाता है कि वहां पर क्या हुआ? महाराष्ट्र में क्या हुआ? महाराष्ट्र के संबंध में अभी लालू प्रसाद जी ने भी यहां पर बताया कि करीब 2 लाख 29 हजार लोगों को नोटिसेज़ देकर एग्ज़ामिनेशन के लिए वहां पर बुलाया गया था और 307 जगहों पर उनका एग्ज़ाम हुआ। मुझे जो महाराष्ट्र गवर्नमेंट ने बताया है, वह यह है। कि जो भी एग्जामिनेशन देने आया था वह एग्जामिनेशन दिए बगैर वापिस नहीं गया है। मगर यह बात गलत है कि कोई रेलवे स्टेशन पर आ रहा है तो उसको पकड़ कर आप मार रहे हैं या किसी स्टेशन में जाकर आप उसको एग्जामिनेशन में जाने से रोक रहे हैं या चार-पांच जगहों पर जाकर उन्होंने एग्जामिनेशन हॉल में भी गड़बड़ी कर रहे हैं। यह ऐसी बात है जिसकी हमें निभर्त्सना करनी चाहिए। ऐसा नहीं होना चाहिए और अगर ऐसा किसी ने किया है तो उसके खिलाफ कार्रवाई होना जरूरी है। हमने उनसे पूछा है कि आपने क्या किया है तथा ऐसे लोगों का आपने क्या किया है। उन्होंने जो मुझे सूचना दी है वह मेरे पास है। उन्होंने कहा है कि वहां पर केसेज दाखिल किए हैं तथा एक हजार आठ सौ इकसठ लोगों को गिरफ्तार किया है। यहां पर वृंदा जी ने भी पूछा कि यह फरवरी से हो रहा है आप लोग क्या कर रहे थे, क्या हुआ था उसमें? बिल्कुल सही बात है। अगर इतने दिन से हो रहा है तो क्या कर रहे थे, क्या हुआ, क्या कहा, यह सब पूछने का हक है यहां के सदस्यों को। उन्होंने पूछा है तथा सही ढंग से पूछा है और उन्होंने जो मुझे मालूमात दी है वह यह है कि अब तक 336 केसेज दाखिल किए हैं और जिन लोगों के खिलाफ सब्सटेंशियल आफेंसेज के खिलाफ जो केसेज दाखिल किए हैं वे दो हजार अस्सी लोगों के खिलाफ केसेज दाखिल किए गए हैं। उन्होंने मुझे यह भी बताया कि Preventive Detention के नीचे तीन हजार आठ सौ इकत्तीस लोगों के खिलाफ कार्रवाई की गई। यह बात सही है कि वहां पर जो केसेज दाखिल किए हैं। यहां पर पहले भी एक मामला उठा था और कहा गया था कि आप क्यों नहीं कार्रवाई करते हैं। हमको यह समझना जरूरी है कि हमको कंस्टीट्यूशन के मुताबिक एग्जीक्यूटिव को पनिश करने का अधिकार नहीं है, एग्जीक्यूटिव को प्रोसीक्यूट करने का अधिकार है, पनिश करने का अधिकार तो जज को है। बेल पर छोड़ने या नहीं छोड़ने का अधिकार तो जज को है और यह समझदार लोग हमसे पूछें कि उनको बेल पर छोड़ा तो आप क्या करेंगे। तुम तो वहां जज की कुर्सी पर बैठकर जजमेंट नहीं दे रहे हैं या वहां का होम मिनिस्टर जजमेंट नहीं दे रहा था या वहां का चीफ मिनिस्टर जजमेंट नहीं दे रहा था। उसके खिलाफ आप अपील में जरूर जा सकते हैं। अगर अपील में नहीं गए तो हम जरूर पूछ सकते हैं कि आपने उसके खिलाफ अपील क्यों नहीं की।...**(व्यवधान)**...

श्री यशवंत सिन्हा: गृह मंत्री जी, सही धारा लगाने का अधिकार तो है उसको...**(व्यवधान)**...

श्री वीरेन्द्र भाटिया: नेशनल सिक्योरिटी एक्ट में तो बेल का प्रावधान नहीं है...**(व्यवधान)**

श्री शिवराज वी0 पाटिल: देखिए, यह कानून की बात है, यह कानून की बहस होनी है तो मैं घंटों आपके साथ कानून की बात करुंगा कि नेशनल सिक्योरिटी एक्ट लागू होता है या नहीं, कंस्टीट्यूशन लागू होता है या नहीं, क्रिमिनल प्रोसीजर लागू होता है या नहीं। अब मैं उस बहस में नहीं पड़ना चाहता। ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति: भाटिया जी, आपने जो कहना था वह कह दिया।...**(व्यवधान)**...

श्री यशवंत सिन्हा: अगर धारा सही नहीं लगेगी तो जज क्या करेगा।...**(व्यवधान)**... That is the issue.

श्री शिवराज वी0 पाटिल : श्रीमन, मैं कहना चाह रहा हूं कि यहां पूछा गया कि क्या किया गया। ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति : वीरेन्द्र जी, आप उनको बोलने दीजिए। जब आप बोल रहे थे तो किसी ने आपको डिस्टर्ब नहीं किया। तो आप उनको बोलने दीजिए।

SHRI PENUMALLI MADHU: This is not giving confidence to the people.

श्री शिवराज वी0 पाटिल: श्रीमन, मेरे बोलने के बाद अगर मेरे साथी कोई प्रश्न पूछना चाहें तो मैं जवाब दे दूंगा मगर बीच-बीच में उठकर पूछने की जरूरत नहीं है। सरकार ने क्या किया है आपको यहां पर यह बताया है। उसके बाद एक बात और यहां पर उठी कि आर्टिकल-355 के नीचे क्या आप उनको नोटिस देंगे? मैं आपको कहना चाहता हूं कि जब भी हम कोई लैटर लिखते हैं, एडवाइजरी देते हैं या डायरेक्टिव्ज देते हैं तो यह नहीं लिखते हैं कि "We are issuing this direction under article 355 of the Constitution of India." यह नहीं लिखते हैं। हम उस लैटर में लिखते हैं कि "You have committed a breach of the Constitution." That is more than enough. Once you say that you have committed a breach of the Constitution under article 365, the Government of India is entitled to impose President's rule under article 356. Under article 355, you give them a notice. You give them the direction. That is what we have done, already done. But you think that that notice has to be given under article 355. We have given notices to other States also, but we have not mentioned that this is being done under article 355 ***...(Interruptions)...***

श्री उपसभापति: वह बोल रहे हैं। ...**(व्यवधान)**...

श्री यशवंत सिन्हा: महाराष्ट्र को दिया है क्या ? ...**(व्यवधान)**... महाराष्ट्र को नोटिस दिया है ...**(व्यवधान)**...

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: I will reply to each of your questions. Let me complete. ***...(Interruptions)...*** I am replying. ***...(Interruptions)...***

श्री उपसभापति : आप बैठ जाइए, वह बोल रहे हैं। अभी उन्होंने कम्पलीट नहीं किया है।...(व्यवधान)... आप उनको बीच में डिस्टर्ब कर रहे हैं। ...**(व्यवधान)**...

श्री दिग्विजय सिंह : वह अपने उत्तर में बतायें कि कब नोटिस दिया है ? ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति : दिग्विजय सिंह जी, उन्होंने कहा है कि मैं कम्पलीट करने के बाद आपके सवालों का जवाब दूंगा। ...**(व्यवधान)**...

SHRI YASHWANT SINHA: Sir, we have every right to ask.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You have every right to ask, but he also has every right to say that. ***...(Interruptions)...***

SHRI YASHWANT SINHA: He has made a statement that the ***...(Interruptions)...*** Government has issued a notice under article 355. This is what he has said. ***...(Interruptions)..***

श्री मनोहर जोशी: सर, महाराष्ट्र को नोटिस कब दिया है ? ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: देखिए, उन्होंने कहा है कि यह जरूरी नहीं है कि आर्टिकल 356 ...(**व्यवधान**)...

SHRIMATI BRINDA KARAT: Sir, he said, 'breach of Constitution' means article 355. I want to know whether he has used these words or not. He said that he has given such a notice to Maharashtra Government. We want to know when it was issued ***...(Interruptions)...***

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: Let me complete. ***...(Interruptions)...***

SHRI MANOHAR JOSHI: Sir, let him ask his officers. ***...(Interruptions)...***

श्री उपसभापति: जोशी जी, आप उनको कम्पलीट करने दीजिए। Let him say whatever he wants to say. He is the Home Minister of the country. ***...(Interruptions)...***

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: Please understand, the Constitution is not something which you can discuss within five minutes' time on the floor of the House. ***...(Interruptions)...*** You discuss these constitutional provisions in the court of law for hours together. ***...(Interruptions)...***

SHRI YASHWANT SINHA: Sir, we don't agree with that. ***...(Interruptions)...*** This is the body where we discuss. ***...(Interruptions)...*** This is not the court of law. ***...(Interruptions)...*** This is the constitutional provision. ***...(Interruptions)...*** If the constitutional provisions have been violated, is he suggesting that we go to the court and not raise it here? ***...(Interruptions)...***

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No; no. Let him complete. After that, you can ask the specific questions. ***...(Interruptions)...***

SHRI S.S. AHLUWALIA: Sir, he is saying ... ***...(Interruptions)...***

श्री उपसभापति: आहलुवालिया जी, आप जो प्रश्न पूछना चाहते हैं, वह उनकी स्पीच कन्क्लूड होने के बाद पूछ लीजिए। ***...(Interruptions)...*** That is what I am saying.***...(Interruptions)...*** देखिए, उन्होंने कहा है कि यह जरूरी नहीं है कि आर्टिकल 356 ...(**व्यवधान**)... Mr. Vijayaraghavan, let him complete. ***...(Interruptions)...*** Let him complete.***...(Interruptions)...***

श्री दिग्विजय सिंह: सर, हम डेट पूछ रहे हैं। मंत्री जी डेट बता देते, तो यह खत्म हो जाता।

श्री उपसभापति: देखिए, उन्होंने कहा है कि यह जरूरी नहीं है कि आर्टिकल 356 ...(**व्यवधान**)... आप बाद में पूछ लीजिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री एस0एस0 अहलुवालिया: आप डेट बता दीजिए। ...(**व्यवधान**)...

SHRI PENUMALLI MADHU: Sir, how long we will discuss like this? What is this?***...(Interruptions)...***

MR. DEPUTY CHAIRAM: You should help.

SHRI PENUMALLI MADHU: The country is demanding something from him. ***...(Interruptions)...***

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No; no. Mr. Madhu, he has every right to reply to your question. He is replying.

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: Sir, I was trying to explain to this hon. House that whenever we give any direction, any notice, we are asking the State Governments to follow the constitutional provision, follow the law; and if those things are not done by them, the Government of India is entitled to take the extreme step against that Government under article 356. This is the legal position I was trying to explain. *...(Interruptions)...* And, while doing so, I was saying that some people are under the impression that whenever such a direction is given, it is to be mentioned in the letter of the direction that under article 355 this is done, this is not done*...(Interruptions)...*

SHRI MANOHAR JOSHI: Sir, I am on a point of order. Sir, the hon. Minister has made a statement that he has served the notice to the Government of Maharashtra under a particular section. The people on this side of the House are asking for the date on which this notice was issued, only because we have no information about it. He is misleading the House. Sir, you cannot protect him even if he is a Minister. *...(Interruptions)...*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no. Don't come to the conclusion that I am protecting him. *...(Interruptions)...* The records are there.

SHRI MANOHAR JOSHI: Tell us the dates on which notice was issued. *...(Interruptions)...*

SHRIMATI BRINDA KARAT: Please tell us the dates.

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: Don't think that I am speaking without having the letters in my hand. I can give you the dates. I can read out the contents of the letter. *...(Interruptions)...*

SHRI MANOHAR JOSHI: Give us the dates only.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please let him complete whatever he has to say.

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: After every sentence you are interrupting me and you may have something in your mind while others may have something else. How do I respond? You should first listen to my full reply and then put questions. I shall give you the letters and give you the dates. *...(Interruptions)...* Why do you want to ask about it in-between? I did not interrupt you.

SHRI DIGVIJAY SINGH: You are the Minister, not us.

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: So, if I am the Minister, can I talk when you are talking? *...(Interruptions)...*

श्री उपसभापति: बोलने दीजिए *...(Interruptions)...*

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: Sir, I have started by saying that I do not hold any different views from those held by them. Now, even after that if you wish to raise questions in order to make

yourself known, to impress the House and to make it known outside, you do that after I conclude my speech. *...(Interruptions)...*

Sir, I have personally spoken to the Chief Minister. Lalu Prasadji has personally spoken to the Chief Minister as well. When I was in Latur, in my constituency, when this was happening, the Chief Minister was there with us. Both of us spoke to the Chief Minister. I spoke to the State Home Minister also over telephone, and the office has issued three notices to them and we have asked them to take action. *...(Interruptions)...* I shall give you the dates. Why don't you wait?

SHRI MANOHAR JOSHI: Why are you not giving us the dates? You are giving us so much information; what is the difficulty in giving the information we are asking for?

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: I can give you the dates. They are 19/10, 20/10, again on 20/10 and then 21/10. I have got the papers with me; I can satisfy you with details. You may ask questions afterwards. But do not obstruct my flow. I hope that you are not so weak that you would be influenced by my arguments. You have got your own point of view.

The point I was making was that I have spoken to them personally; Lalu Prasadji has spoken personally to them and we have anger about what is happening in Maharashtra. This should not happen in Maharashtra. This should not happen anywhere. Let me make one more point here. This is not the view held by all the people of Maharashtra, the people living there. They are broad-minded; they want people to go there, live there and carry out their business and avocation over there. The people of Maharashtra would welcome people from any part of the country; and that is how it should be. That is how it is in our ethos. It is in our Constitution. It is there in our law. If some people have different views, we would try to talk to them and convince them that they are not holding the right types of views. And if even after that they do not fall in line with the line adopted in our Constitution, which is according to our ethos, law would take its own course. Law has to take its own course, and if law is not allowed to take its own course, the Government of Maharashtra would be compelled to take that course. We would do it; the House will do it; the people will do it.

SHRI DIGVIJAY SINGH: Can you tell us when you would take action? *...(Interruptions)...*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: He has not yet completed.

SHRI YASHWANT SINHA: The law is not being allowed to take its course. *...(Interruptions)...*

(At this stage some hon. Members left the Chamber)

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: Sir, the point which I was making was this. ...*(Interruptions)*... The is narrow-mindedness, short-sightedness and this is parochialism which is not going to be helpful to us, and over and above that this is politics. If you have heard the arguments here made by the hon. Members, they are not against the narrow ideas, they are not against the persons who are responsible for this, but they are against the persons who are not agreeing to there ideas and they take pride in criticising others and not those who have actually done this. If this kind of political stand is taken, is it possible for us to see that these kinds of difficulties would not arise in our country? This is the point. If this is politics, it is not going to help. If there is a real desire to see that the country remains united and integrated, it will help, you are saying that one person has done this thing, he has not done this thing. What is it we are doing in the House itself? If we are not doing politics, what is it we are doing? And, politics is not going to be helpful in this matter. Let me say on behalf of the Government of India that we do not subscribe to the policy that any person from anywhere will not be allowed to go to any other to carry on his business or trade or any kind of activity over there. This right is provided by the Constitution. We will abide by the Constitution and we will see that the Constitution is implemented fully. If anybody is trying to go against it, we will try to persuade him, and if he is not persuaded through arguments, the law will take its own course and there shall be shown no leniency against such a person who is taking steps which are of divisive nature. There are two kinds of tendencies visible in the country today. One is which unites the country and it should be welcome and the other is which divides the country in the name of politics, in the name of religion, in the name of language and in the name of province. That kind of tendency has not to be supported, it should be opposed and I have no doubt in my mind that all the hon. Members sitting in this House will ask us to do it, the Constitution asks us to do it, the Government of India's intention is to do it and I have no doubt in my mind that the State Government's intention and desire are the same thing. They would like to deal with the problem in a tactful manner, and they would like to deal with the problem in a manner which doesn't allow the situation escalate into a bigger problem. But they have definitely the same view and they would like to deal with this matter in the manner in which these divisive tendencies are curbed. That is our stand. I don't have to say anything more than this. Thank you.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The House is adjourned for one hour.

The House then adjourned at forty-four minutes past two of the clock.

The House reassembled at forty-four minutes past three of the clock,
MR. DEPUTY CHAIRMAN in the Chair.